ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-आश्विन-कार्तिक संवत् 2072
अक्टूबर 2015

अंक 123, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

विजयादशमी पर्व
की हार्दिक शुभकामनाएं

श्राद्ध एवं तर्पण

पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न 5 सितंबर शिक्षक दिवस की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७२
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११६
दयानन्दाब्द - १९१

वर्ष - ११, अंक ४ ओ३म् मास/सन् - अक्टूम्बर - २०१५

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : क्यों करे हम उसकी स्तुति ?	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : सुखमय जीवन का एक ही सूत्र- नैतिकता	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	अब खत्म करें जातीय आरक्षण	डॉ. वेदप्रताक वैदिक	०८
४.	हम प्रभु को अपना कर यज्ञमय बनें	डॉ. अशोक आर्य	१०
५.	श्रीराम का 'मन्यु'	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	१२
६.	महर्षि दयानन्द ने देश व धर्म के लिए, माता–पिता–बन्धु–गृह अपने सभी सुखों का स्वेच्छा से त्यग किया .	मनमोहन कुमार आर्य	१६
७.	वृद्धत्व वरदान है, अभिशाप नहीं	पं. राकेश आर्य	२०
८.	पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२२
९.	मोक्ष के साधन	आचार्य वासुदेव व्रथी वेदश्रमी	२३
१०.	महान बनने के लिये इनको मिला, परिवार के किसी एक सदस्य का सहयोग	खुशहालचन्द्र आर्य	२५
११.	विदेश में बजाई वैदिक दुन्दुभि	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	२७
१२.	वेद प्रचार सात समन्दर पार	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	२९
१३.	होमियोपैथी चिकित्सा से सोरायसिस का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३१
१४.	समाचार दर्पण		३२

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

वेद वेदामृत

क्यों करें हम उसकी स्तुति ?

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

क ईं स्तवत् कः पृणात् को यजाते, मदुग्रमिन्धवा विश्वहावेत्।
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं, कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः ॥ ऋग्. ६.४७.१५

ऋषिः गर्गः भरद्वाजः। देवता इन्द्रः। छन्दः त्रिष्टुप्।

● **(कः)** कौन **(ईं)** इस (इन्द्र) की **(स्तवत्)** स्तुति करे, **(कः)** कौन **(पृणात्)** (इसे) रिझाये, **(कः)** कौन **(यजाते)** (इसकी) पूजा करे, **(यत्)** क्योंकि **(मधवा)** धनवान् इन्द्र **(उग्रम् इत्)** उग्र की ही **(विश्वहा)** सदा **(अवेत्)** रक्षा करता है। (वह) **(शचीभिः)** (अपने) कर्मों से **(अन्यम्-अन्यम्)** एक-एक करके **(अपरं)** पिछड़े हुए को (पूर्व) अग्रगामी (तथा) **(पूर्वं)** अग्रगामी को **(अपरं)** पीछे **(कृणोति)** कर देता है, **(इव)** जैसे **(पादौ)** पैरों को **(प्र-हरन्)** आगे रखता हुआ (मनुष्य) **(अन्यम्-अन्यम्)** एक-एक करके **(अपरं)** पीछे के (पैर को) (पूर्व) आगे (और) **(पूर्वं)** आगे के (पैर को) **(अपरं)** पीछे **(कृणोति)** करता चलता है।

तुम कहते हो कि परमैश्वर्यवान् इन्द्र प्रभु की स्तुति करो, अर्चना करो, वंदना करो। पर हम पूछते हैं कि क्यों करें हम उसकी स्तुति ? कौन उसका स्तवन करे ? कौन उसे रिझाये ? कौन उसका यजन-पूजन करें ? यह सब करने से क्या लाभ है ? तुम्हारा वह परमैश्वर्यशाली इन्द्र तो उसी की रक्षा करता है, जो उग्र है। संसार में जिसकी लाठी उसकी भैंस की ही लोकोक्ति चरितार्थ हो रही है। जो उग्र, प्रचंड और बली है, उसी की विजय होती है। पूजा करने से परमेश्वर हमारी रक्षा तो कर नहीं देगा। फिर उसकी पूजा में समय नष्ट क्यों करें ?

भाईयों ! यदि तुम ऐसा समझते हो तो भूल करते हो। यदि जगत् में उग्र लोगों की ही सदा विजय होती, तो यह जगत् कभी का समाप्त हो चुका होता। उग्र जन सदा पनपते रहते और धर्मात्माओं का शोषण करते रहते तो एक भी धर्मात्मा भूतल पर न बचता। भले ही कभी-कभी यह देखने में आता हो कि उग्र दुर्जन ही रक्षित हो रहे हैं, उन्हीं की विजय हो रही है, पर अन्ततः वे परमेश्वर के प्रकोप के ही भाजन बनते हैं। जब उनके पाप का घड़ा भर जाता है, तब एक दिन वे सबसे पीछे खड़े दिखाई देते हैं और रक्षा तो दूर, उनकी सत्ता भी खतरे में पड़ी दिखाई देतीहै। क्या तुम नहीं देखते कि जो आज पिछड़े हुए हैं, वे सबसे आगे की पंक्ति में पहुंच जाते हैं और जो सबसे आगे खड़े हैं, वे पीछे पहुंच जाते हैं ? जैसे चलता हुआ कोई मनुष्य क्रमशः पीछे के पैर को आगे बढ़ाता है और अगले पैर को पीछे ले जाता है, वैसी ही समाज में लोगों की गति हो रही है। इन्द्र परमेश्वर ही अपने कर्मों से यह कर रहे हैं। अतः परमेश्वर की स्तुति को निष्फल मत समझो। उसकी स्तुति, कृपा और प्रेरणा से एक दिन तुम अवश्य ही सबके शिरोमणि बन जाओगे। उग्र की नहीं, तुम्हारी रक्षा होगी, तुम विजयी बनोगे। अतः सब शंकाओं और सन्देहों को मिटाकर बिना प्रसाद के तल्लीन होकर इन्द्र-प्रभु की स्तुति और आराधना करो। प्रभु तुम पर कृपा करेंगे।

संस्कृतार्थ :- १. ईम् एनम् (निरु. १०.४५), २. स्तवत्, ष्टुञ स्तुतौ, लेट्, ३. पृणात् प्रीणयेत (सायण)। पृण प्रीणने लेट्। ४. जयाते, जय, लेट्। ५. शची कर्म (निघं २.१)

सम्पादकीय

सुखमय जीवन का एक ही सूत्र : नैतिकता

ईश्वर की समस्त कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है। **'बड़े भाग मानुष तन पावा'** परम्परा के अनुसार चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद मानव-तन मिलता है। ताओ धर्म के संस्थापक चीनी दार्शनिक लाओजे का कथन है कि **'जीवन मनुष्य के लिए ईश्वर का सर्वोपरि उपहार है, इसकी गरिमा इतनी बड़ी है जितनी संसार में किसी अन्य सत्ता की नहीं।'** चण्डीदास का मत है - **'मनुष्य सबके ऊपर है, उसके ऊपर कुछ नहीं।'** प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने लिखा है - **'सुन्दर है बिहग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सुन्दतम्।'** पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी लिखा है - मनुष्य जीवन-स्रष्टा की सर्वोपरि कलाकृति हैं। ऐसी कायिक और मानसिक सर्वांगपूर्ण रचना और किसी प्राणी की नहीं है। यह उपहार असाधारण है। संस्कृत साहित्य में आया है - **मानुष्यं दुर्लभं लोके।**

इन कुछ मतों से स्पष्ट है कि मानव जीवन बहुमूल्य है। मनुष्य परिश्रमी है, अध्यवसायी है, उसमें बुद्धि है, चेतनता है। उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं। संसार में जो कुछ दिखाई देता है, वह मानव की देन है। सृष्टि के आरम्भ से अब तक उसने लम्बी यात्रा तय की है और कष्टों तथा कठिनाईयों को धैर्यपूर्वक सहते हुए विकास की चरमावस्था को प्राप्त किया है। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उसने अनेक आविष्कार और खोजें की तथा कुछ हद तक प्रकृति पर भी विजय पा ली है। संक्षेप में, यदि मानव नहीं होता तो सभ्यता एवं संस्कृति के क्षेत्र में किसी प्रगति की कल्पना नहीं हुई होती।

प्रकृति में हमें दो परस्पर विरोधी चीजें दिखाई पड़ती है जैसे प्रकाश और अन्धकार, दिन और रात, गर्मी और सर्दी। ऐसे ही, मनुष्य भी दो प्रकार के होते - अच्छे और बुरे, सज्जन और दुर्जन, नैतिक और अनैतिक। नैतिकता से युक्त मानव को ही अच्छा और सज्जन कहा जा सकता है तथा अनैतिक मानव बुरा एवं दुर्जन होता है।

नैतिक क्या है और अनैतिक क्या है ? नैतिकता और अनैतिकता से क्या तात्पर्य है ? समाज में सर्वमान्य कुछ स्थापित नियम होते हैं, आचरण होते हैं, परम्पराएँ होती है जैसे सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, अपने लाभ के लिए दूसरों को क्षति नहीं पहुंचाना, सच्चरित्र होना, शक्ति एवं सत्ता का दुरुपयोग नहीं करना आदि। जो इनका पालन करते हैं वे नैतिक है, जो इनका उल्लंघन करते हैं वे अनैतिक है। स्थापित रीति-नीतियों का अनुपालन ही नैतिकता है और इनके विपरीत आचरण की अनैतिकता कहेंगे। नैतिक मनुष्य सदा अपने कर्त्तव्यों का पालन करता है और कहीं अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करता।

आजकल समाज में नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास होता दिखाई पड़ रहा है। शासन एवं समाज में सर्वत्र अनैतिकता का आधिपत्य होता जा रहा है। भौतिक सुख-साधनों के अधिकाधिक उपभोग की प्रवृत्ति के कारण नैतिकता गौण हो गई है। छोटे और निजी हित के लिए बड़े सामाजिक हित को त्यागने में थोड़ा भी संकोच नहीं होता। यह स्थिति चिन्तनीय है।

यह आम धारणा है कि राजनीति में नैतिकता का कोई स्थान नहीं होता। स्वार्थ पूर्ति के लिए अनुचित साधनों को भी अपनाया जा सकता है। ऐसी राजनीति का जनक आधुनिक काल में इटली के मेकियाबेली को माना जाता है, किन्तु नैतिकताविहीन राजनीति है घातक। इससे साम्राज्यवाद, युद्ध, हिंसा, शोषण आदि को ही प्रोत्साहन मिलता है, सत्यन्याय प्रबलता पाता है, जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होती है। आज की भारतीय राजनीति इससे भिन्न नहीं है। इसमें वोट, जाति और कुर्सी की प्रधानता है। दलगत राजनीति में सर्वत्र अनैतिकता का बोलबाला है। नेताओं की कथनी और करनी, सिद्धान्त और व्यवहार में एकरुपता नहीं है। घटिया तरीके से धन और शक्ति अर्जित करना ही उनका साध्य बन गया है। जनहित को ताक पर रखकर सत्ता के लिए वे टूट पड़ते हैं। सभा-सम्मेलनों में मार-पीट, गाली-गलौच, तोड़-फोड़ और छीना-झपटी तो आम बात हो गई है। चुनाव बड़ा हो या छोटा पैमाने का, लोकसभा या विधानसभा का हो अथवा ग्राम पंचायत या किसी स्थानीय संस्था का शान्तिपूर्वक एवं अनुशासित मतदान हो ही नहीं पाता। स्थिति इतनी भयानक हो गई है कि राजनीति से अपराधी भी प्रश्रय पाते हैं, राजनीति का अपराधीकरण हो गया है या फिर यों कहें कि अपराध का राजनीतिकरण हो गया है।

सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में भी इसी अनैतिकता का बोलबाला है। बिना रिश्वत के कहीं कोई काम होना सम्भव नहीं। सरकारी तथा गैरसरकारी-सभी विभागों में घपलेबाजी है। सेवक अपने स्वामी को भी धोखा देने से बाज नहीं आता। लाखों-करोड़ों का चूना लगा दिया जाता है। अस्पताल में रोगियों के लिए औषधि, दूध-फल आदि जो खरीदना है, उन्हें अधिकारी बाजारों में बेचकर अपनी जेब भरते हैं। औषधि विक्रेता नकली अथवा जाली दवा बेचते हैं। दुकानदार खाद्य-पदार्थों में मिलावट करता है। ग्वाला दूध में पानी मिलाता है। प्रकाशक दूसरों की किताबें चोरी से छाप कर बेचते हैं। यात्री बिना टिकट सफर करते हैं तथा अधिकारी जाली यात्रा-भत्ता का बिल बनाते हैं। जंजीर खींच कर गाड़ी रोक लेना आम बात है। इससे दूसरों को कितनी असुविधा होती है, यह कौन देखता है ? महिलाओं के साथ अमानुषिक व्यवहार, उनका शोषण, दहेज के लिए उनकी हत्या आदि के समाचार रोज ही सुनते हैं। विश्वविद्यालयों में परीक्षा उपहास की चीज हो गई है। स्कूल-कालेजों में पढ़ाई लिखाई होती नहीं, परीक्षाओं में नकल करना विद्यार्थियों का जन्मजात अधिकार हो गया है। जाली प्रमाण पत्र निगर्त हो रहे हैं, केवल पैरवी के आधार पर नौकरियां मिलती है जिसके लिए काफी बड़ी रकम भेंट करनी होती है।

धार्मिक क्षेत्र में भी स्थिति ऐसी ही विकृत है। धर्म और नैतिकता के बीच जहां घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए, वहां दोनों के बीच की खाई दिनोदिन चौड़ी होती जा रही है। सद्विचार और सत्कर्म लुप्त हो गए हैं। अपवित्रता, कृत्रिमता, आडम्बर और साम्प्रदायिकता ही आज धर्म के प्रतिरुप हैं। धर्म जहां परस्पर प्रेम एवं भाईचारे में वृद्धि का सूत्र होना चाहिए था, वहां आज वह दंगा-फसाद, बैर-विरोध और अलगाववाद को बढ़ाना देने वाला हो गया है।

पवित्रता तो अब केवल कहने भर को रह गई है, दिल और दिमाग में कहीं उसका अस्तित्व नहीं, तीर्थ स्थानों में भी उसका अभाव है। वहां तो और गन्दगी एवं अनाचार का साम्राज्य है। सफल और सुखमय जीवन के लिए नैतिकता का बड़ा महत्व है। नैतिकता में अद्‌भुत शक्ति है, अनोखा आकर्षण है। नैतिकता जीवन का प्रकाश है और इसके ठीक विपरीत अनैतिकता अन्धकार की कालिमा है। नैतिकता वरदान है, अनैतिकता अभिशाप है। एक मानव के लिए कल्याणकारी है तो दूसरा विनाश का सूत्रपात करने वाला है। हमारे मनीषियों ने स्वर्ग और नरक की जो कल्पना की थी, वह किसी दूसरे लोक में नहीं, इसी पृथ्वी पर ही दोनों विद्यमान है। नैतिक गुणों से युक्त प्रत्येक स्त्री-पुरुष का जीवन शान्ति और सुख का भंडार होता है, सादगी तथा उत्कृष्ट विचारों का प्रतीक होता है और सच्चे अर्थ में स्वर्गिक होता है। किन्तु अनैतिक मानव का जीवन नारकीय होता है। वह उचित-अनुचित का भेदभाव नहीं करता, स्वार्थपूर्ति के लिए गर्हित कुकर्म से बाज नहीं आता और पतन की निम्नतम सीमा तक पहुंचने में कोई आनाकानी नहीं करता।

भौतिकता की चकाचौंध में वह सुखी सम्पन्न होने की साध भले ही पूरी कर लेता है किन्तु जीवन के वास्तविक सुख-शान्ति को वह कभी अनुभव नहीं कर सकता। ऐसे लोग नर नहीं, नरपिशाच हैं और अन्ततोगत्वा नारकीय जीवन ही जीते हैं। मनुष्य जीवन के साथ अनेक जिम्मेदारियां हैं, मर्यादाएं हैं, उसकी अपनी सीमा है। केवल मनुष्य के रुप में इस धरती पर पैदा होकर, भरपेट खा-पी कर तथा अच्छे वस्त्र पहन कर वह सुखी और भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। जब उसके चिन्तन और कार्य, सिद्धान्त और व्यवहार नैतिकता से ओत-प्रोत होंगे, तभी उसका जीवन सार्थक और सफल हो सकेगा। उसका व्यक्तित्व विशाल होगा, दृष्टिकोण व्यापक होगा और वह मानव-मात्र से प्रेमभाव रहेगा। सर्वत्र उसे ख्याति मिलेगी, वह सम्मान पायेगा तथा उसका सिर ऊंचा रहेगा-गर्वोन्नत और वह अपनी गरिमा पर कभी आंच नहीं आने देगा। दुनियां में समय-समय पर नैतिक व्यक्तियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। महर्षि दयानन्द महावीर, बुद्ध, सुकरात, रामकृष्ण परमहंस के नाम उल्लेखनीय है।

जीवन में नैतिकता के गुणों का समावेश करना और बढ़ावा देना अत्यावश्यक है। किन्तु यह ऊपर से दबाव देकर, आदेश देकर अथवा कानून से नहीं होगा। व्यक्तियों के जीवन में बचपन से ही इसका विकास होना चाहिए। बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के पग-पग पर नैतिकता से पूर्ण शिक्षा-पद्धति का होना जरुरी है। पाठ्यपुस्तकों में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को उचित स्थान मिलना चाहिए, महापुरुषों की जीवनियां तथा नैतिक आदर्शों से परिपूर्ण कथाओं का समावेश होना चाहिए। अनैतिक तथा अश्लील पुस्तकों के प्रकाशन पर तथा अश्लील फिल्मों के प्रदर्शन पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। मादक वस्तुओं का सार्वजनिक रुप से सेवन वर्जित होना चाहिए। बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छी संगति में रहने तथा अच्छी पुस्तकों के पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। बच्चों का प्रारंभिक विद्यालय तो परिवार ही होता है, अतः परिवार के सदस्यों का और खासकर माता-पिता का आचरण पूर्णतः नैतिक होना चाहिए। बचपन में जीवन की जैसी नींव पड़ेगी, भावी जीवन की इमारत का निर्माण उतना ही भव्य हो पायेगा। राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय किसी भी क्षेत्र में समाज की गाड़ी नैतिकता के अभाव में आगे नहीं बढ़ सकती। व्यक्ति तथा राज्य दोनों की नैतिकता के स्तर में कोई भेदभाव नहीं रहना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तभी विश्व शान्ति की स्थापना में सफलता मिल सकेगी तथा मानव-समाज में परस्पर सहयोग और सद्‌भाव को प्रोत्साहन मिल पायेगा।

- आचार्य कर्मवीर

ज्वलन्त प्रश्न

अब खत्म करें जातीय आरक्षण

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक, अध्यक्ष, भारतीय विदेश नीति परिषद

> समर्थ पटेलों को आरक्षण की जरुरत क्यों महसूस हो रही है ? इसलिए कि 'माले मुफ्त, दिले बेरहम' जब सब बहती गंगा में डुबकी लगा रहे हैं तो वे क्यों न लगाएँ ?

गुजरात में चला पाटीदारों का आंदोलन सचमुच स्वागत योग्य है, क्योंकि यह आरक्षण-जैसे सड़ी-गली व्यवस्था को खत्म करने का कारण बनेगा। यह आंदोलन बड़े मजबूत तर्क पर आधारित है। यह कहता है कि यदि आप अन्य पिछड़ों को आरक्षण दे रहे हैं तो हमें भी क्यों नहीं ? या तो हमें भी आरक्षण दो या फिर किसी को मत दो। इसने आरक्षण के पिटारे को खोल दिया है। आरक्षण को लेकर अहमदाबाद की बड़ी सभा ने नेताओं के छक्के छुड़ा दिए। देश के सारे नेता, वे भी जो अपने आपको तीस मार खाँ समझते हैं। नहीं जानते कि क्या करें ? गुजरात के पटेलों का विरोध करें या समर्थन। जो विरोधी नेता मोदी-विरोधी हैं, उन्होंने पटेलों की मांग का तत्काल समर्थन कर दिया, लेकिन जिन्होंने सारे मामलों पर दूरदेशी से सोच-विचार किया है, उन्होने सोचा कि पटेल लोग गरीबों का आटा गीला कर रहे हैं। सरकारी नौकरियों में कुल २७ प्रतिशत आरक्षण है और सैकड़ों जातियाँ पहले से उसे लपकने पर आमदा है और अब ये भी कूद पड़े। पटेलों के कूदने से आरक्षण की रेवड़ियों में बंदरबांट बढ़ेगी और यादव व कुर्मियों वगैरह का नुकसान हो जाएगा। पटेलोंका विरोध करने के लिए सभी पहले से आरक्षित पिछड़े अब उठ खड़े होंगे। पटेल आंदोलन का अर्थ होगा-पिछड़ों का पिछड़ों के विरुद्ध गृहयुद्ध !

पिछड़ों का कुल आरक्षण तो २७ प्रतिशत है। यह प्रतिशत तो बढ़ने वाला नहीं है। इस पर संवैधानिक पाबंदी है। अगलों की सीटों में तो कोई कमी होने वाली नहीं है। जो भी घाटा होगा, वह उन्हीं पिछड़ों का होगा, जो पहले से आरक्षित है, इसीलिए हार्दिक पटेल की भोपाल की सभा फुस्स हो गई है। अखिल भारतीय आरक्षण गुर्जर संगठन ने भी उसका विरोध किया है। उसका कहना है कि इन पटेलों ने हमेशा गुर्जर-आरक्षण का विरोध किया है।

वास्तव में १९७७ के आस-पास जब गुजरात में खास (क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी, मुस्लिम) अभियान चला तो इन जातियों का आरक्षण देने का सबसे तगड़ा विरोध पदेलों ने किया। लगभग १०० लोग मारे भी गए। माधवसिंह सोलंकी के नेतृत्व में 'खाम जातियों ' ने कांग्रेस को अपूर्व विजय भी दिलवाई। पटेलों ने भाजपा का साथ दिया। मोदी की जीतों का आधार भी वे ही रहे, लेकिन अब वे बगावत में उठ खड़े हुए हैं। यदि पटेल आंदोलन को भाजपा ठीक से संभाल नहीं पाई तो गुजरात में तो उसका सुपड़ा साफ ही समझ लीजिए, सारे भारत में भी उसे अब जाटों, गुर्जरों, कुर्मियों, कमाओं, रेड्डियों, वोकालिग्गाओं आदि का मुकाबला करना पड़ेगा। ये सब जातियां मूलतः खेतिहर हैं। ग्रामीण है, गरीब हैं, शिक्षा और नौकरियों में पिछड़ी हैं, लेकिन इन्हीं जातियों में ५-१० प्रतिशत ऐसे लोग भी हैं जो राजनीति, व्यवसाय, नौकरियों और शिक्षा में अग्रणी हैं। वे इतने अग्रणी हैं कि बड़े-बड़े झगड़े उनके आगे पानी भरें। गुजरात के पटेल का मतलब है चौधरी ! गांव में जो सबसे समर्थ हो, उसे ही पटेल कहा जाता है। पटेल अगर सचमुच पिछड़े होते तो गुजरात के होने वाले मुख्यमंत्री पटेल कैसे होते ? विधानसभा और संसद में दर्जनों पटेल कैसे होते ? आज से ७०-८० वर्ष पहले सरदार वल्लभभाई पटेल जिस मुकाम पर पहुंचे, कैसे पहुंचते ? आज अमेरिका में जितने भी प्रवासी भारतीय रहते हैं, उनमें पटेलों की संख्या सबसे ज्यादा है। अमेरिका में मोटेलों के मालिकों में पटेलों की संख्या इतनी ज्यादा है कि वहां मोटेल को लोग

पटेल बोलते हैं। इन पटेलों को आरक्षण की जरुरत क्यों महसूस हो रही है ?

वे इसलिए आरक्षण मांग रहे हैं कि 'माले-मुफ्त, दिले बेरहम'? जब सब बहती गंगा में डुबकी लगा रहे हैं, तो वे क्यों न लगाएँ ? गुजरात और केन्द्र की सरकार, दोनों ही हतप्रभ है। एक ने गोली चला दी और दूसरी सिर्फ जवान चलाकर शांति की अपील कर रही है। आरक्षण की मांग का कोई जवाब दोनों के पास नहीं है। वरना पटेलों और आरक्षण मांगने वाली नई जातियों से वे पूछते कि तुम अपनी खेती और काम-धंधे छोड़कर नौकरी, जिसे 'अधम चाकरी' कहा जाता है, क्यों करना चाहते हो ? और फिर यह बताओं कि हर साल ऊंचे दर्जे की कुल कितनी नई सरकारी नौकरियां निकलती है ? सिर्फ पांच-छह हजार। हर प्रदेश में कुछ सौ ! इनका २७ प्रतिशत कितना हुआ ? याने दो-चार दर्जन नौकरियों के लिये हमारे स्वाभिमानी पटेल लोग भीख का पल्ला क्यों पसारें ? जो पिछड़े आरक्षित नौकरियाँ झपट लेते हैं वे अक्सर मालदार, ओहदेदार, ताकतवर और प्रभावशाली पिछड़ों के बेटे-बेटियां ही होते हैं। उन्हें ही सर्वोच्च न्यायलय ने समाज की क्रीमी लेयर कहा है। यह मलाई पर हाथ साफ करने वाले मुट्ठीभर नेता अपनी जाति के लाखों लोगों को आंदोलन की भट्टी में झोंक देते हैं। यह नौकरियों का आरक्षण अयोग्यता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। यदि आरक्षण लाभकर होता तो पिछले सात दशकों में इसकी जरुरत पूरी हो जाती। यदि डॉ. आंबेडकर और डॉ. लोहिया आज जिंदा होते तो इस आरक्षण की भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फेंकते।

डॉ. आंबेडकर ने 'जाति-व्यवस्था का समूलनाश' पुस्तक लिखी और लोहिया जी ने 'जात छोड़ो' आंदोलन चलाया। दोनों ने आरक्षण का समर्थन कुछ समय के लिए इसीलिए किया था कि समता फैलेगी और जात टूटेगी, लेकिन इसने जातिवाद के जहर को भारत की नस-नस में फैला दिया है। इसीलिए जन्म आधारित सारे आरक्षण तुरन्त खत्म किए जाने चाहिए। आरक्षण सिर्फ असमर्थों को, गरीबों को, वंचितों को दिया जाना चाहिए। जन्म के नहीं, कर्म के आधार पर। नागरिकों को थोक में आरक्षण देना उन्हें मवेशी बनाना है। काका कालेकर ने जब १९५५ में पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष के रुप में अपनी रपट राष्ट्रपति को दी थी, तो लिखाथा कि उन्होंने पिछड़ापन जातियों के आधार पर जो तय किया है, वह मजबूरी में किया है। उस समय जगगणना के वैज्ञानिक और तकनीकी तरीके कम उपलब्ध थे। अब तो हर नागरिक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का राज्य को पता होता है। ऐसी स्थिति में अंधों की तरह रेवड़ियां क्यों बांटी जाए ? सिर्फ शिक्षा में आरक्षण दिया जाए। उसे पचास प्रतिशत से बढ़ाकर साठ प्रतिशत कर दिया जाए। शिक्षण संस्थाओं में जाति का विचार किए बिना हर गरीब के बच्चों को शिक्षा, भोजन, वस्त्र, निवास आदि की भी सुविधाएं मुफ्त दी जाए। यह मौलिक परिवर्तन करने की हिम्मत हमारे वोटप्रेमी नेताओं में है या नहीं ? यह अकेले मोदी सरकार नहीं कर सकती। क्या इस बड़े संवैधानिक संशोधन के लिए हमारे सभी राजनीतिक दल तैयार है ? मोदी सरकार के पास अभी भी मौका है कि वह पटेलों के आंदोलन के जवाब में एक आयोग बिठा दे, जो आरक्षण के लाभ-हानि पर विचार करे। उसे जारी रखने या खत्म करने पर विचार करे। यदि आरक्षण दिया जाए तो उसका आधार क्या हो ? क्या आरक्षण को जारी रखना जरुरी है ? यदि आरक्षण देना ही है तो किन जातियों को रखा जाए और किसको हटाया जाए ? यदि सरकारी नौकरियों में आरक्षण देना जरुरी है तो फौज, अदालतों और निजी नौकरियों में क्यों नहीं दिया जाए ?

जो पिछड़े आरक्षित नौकरियाँ झपट लेते हैं वे अक्सर प्रभावशाली पिछड़ों के बेटे-बेटियां ही होते हैं। यही मुट्ठीभर नेता अपनी जाति के लाखों लोगों को आंदोलन की भट्ठी में झोंक देते हैं।

शिक्षण-संस्थाओं में हर गरीब के बच्चों को शिक्षा, भोजन, वस्त्र, निवास आदि मुफ्त दिया जाए। यह मौलिक परिवर्तन करने की हिम्मत हमारे वोटप्रेमी नेताओं में है या नहीं ?

हम प्रभु को अपना कर यज्ञमय बनें

आध्यात्मिक

- डॉ. अशोक आर्य

हम सदा ऐसा प्रयत्न करें कि हम प्रभु को अपना सकें, उसे अपना मित्र बना सकें। ऐसा करने से हमारी सब शक्तियाँ बढ़ जाती हैं। इससे हमारे सब कार्य यज्यमय बन जावेंगे। यज्यमय होने से हम कभी भी अन्यायपूर्ण विधि से धन संग्रह नहीं करेंगे। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के इस ३०वें मन्त्र में इस प्रकार का सन्देश देते हुये कहा गया है कि

अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोस्यूर्जे
त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि।
अग्नेर्जिह्वासि सुहुर्देवेभ्यो धाम्ने मे भव यजुशेषजुषे॥
(यजु. १.३०)

हे जीव! तू सदा उन्नति की और अग्रसर है। अतिदि, जो अखण्डन की देवता है। अदिति कभी टूटती नहीं है। निरन्तरता का नाम अदिति है, कभी न समाप्त होने का नाम अदिति है। प्रभु का नाम अदिति है। इसका स्पष्ट भाव यह है कि अदिति का कभी नाश नहीं होता। अदिति कभी खण्डित नहीं होती। अदिति के कभी टुकड़े नहीं हो सकते। इस कारण ही इसे अखण्डन की देवता मानते हुए कहा गया है कि अदिति के आशीर्वाद से कोई भी अंग या कोई भी शक्ति खण्डित नहीं होती। इसका अर्थ यह हुआ कि स्थायी रुप से हम अखण्डित रह सकेंगे। हमारे किसी भी अंग को कभी कोई क्लेश नहीं होगा। हम सदा स्वस्थ रहते हुए अपना जीवन यापन करेंगे।

मानव जब स्वस्थ होता है तो उसे अपार प्रसन्नता अनुभव होती है किन्तु इसके लिये उसे कटिबद्ध होना, दृढ़ निश्चयी होना आवश्यक है। मानव के कुछ पुरुषार्थ होते हैं। इनको हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रुप में मानते हैं। यह सब पुरुषार्थ हमारा स्वास्थ्य पर ही निर्भर करते हैं क्योंकि कोई भी कार्य बिना पुरुषार्थ के, बिना प्रयास के, बिना यत्न के, बिना मेहनत के सिद्धि नहीं हो सकता और वह व्यक्ति ही पुरुषार्थ अथवा मेहनत कर सकता है, जो स्वस्थ होता है। जिसके पास खटिया से उठने की ही शक्ति नहीं, वह क्या पुरुषार्थ करेगा, जो अपने आपको ही सम्भाल नहीं पा रहा, वह दूसरे की रक्षा कैसे करेगा। इसलिए मानव का स्वस्थ होना आवश्यक है। अतः हमें सदा स्वस्थ रहने के उपाय करने चाहिए।

यास्काचार्य ने भी इस पर प्रकाश डालते हुए कहा «ЖGYTÀ ⋞⋞ ¥'B"अर्थ अदीना वदमाता"। जिसका भाव है कि हे मानव तू सदा अदीन रह। कभी किसी से मांगने वाला, किसी के आगे हाथ फैलाने वाला न बन, इसके साथ ही साथ तू सदा स्वस्थ रहते हुए अदीनता के लिए जो भी दिव्यगुण होते हैं, उनका संकलन करने के लिए कटिबद्ध रहते हुए इन गुणों को पाने का प्रयास करता रह। इससे ही तू निश्चय करता है कि :

(क) मैं सदा स्वस्थ रहूंगा।
(ख) मैं सदा अदीन बना रहूंगा।
(ग) अपने में सदा दिव्य गुणों के निर्माण का प्रयत्न करूंगा।

इस अदिति की स्तुति से ही हमारे यह गुण सम्भव हो पावेंगे। जब अदिति की स्तुति से हम अदीं हो गये हैं स्वस्थ, आदीन और दिव्या जीवन वाले बन गये हैं फिर हम याजी को अफने अंदर व्याप्त करने वाले बनाते हैं। यज्य की भावना तो यह ही है कि हम दूसरे की सहायता करना, दूसरों की उन्नति के मार्ग पर ले जाना, दूसरों की सहायता करना, दान करना आदि। इस यजियी भावना को अंदर ओत-प्रोत करना ही इसका पोषण करना होता है। यज्य की इस भावना को अपने में व्याप्त करने से ही हम यज्यरुप प्रभु के निकट आसान पाने के अदिकारी बनते हैं।

जब इस प्रकार हमें अदिति की प्राप्ति हो जाती है, तब भी हमारी उस पिता को पाने की कामना दूर नहीं होती। पिता के निकट आसन पाने पर भी हम पुनः प्रभु से प्रार्थना करते हैं तथा कहते हैं कि हे पिता! हम तूझे यूं ही पाने का

सदा ही प्रयास करते रहते हैं। हमारा यह प्रयास अकारण ही नहीं होता। इसमें भी हमारा कुछ स्वार्थ छुपा रहता है। उस पिता को पाने के लिए इस मन्त्र में बताया है कि हे पिता ! हम बल की प्राप्ति के लिए, शक्ति की प्राप्ति के लिए तुझे पाना चाहते हैं। आपके मिलने से हमें शक्ति और बल मिल जावेगा।

यह मन्त्र आगे उपदेश करते हुए प्रेरणा करते हुए हम से कहलवा रहा है कि हे पिता ! मैं तुझे अहिंसित आंख से तुझे देखता हूं, अर्थात् मैं तेरी शरण से कभी हिंसा करने वाला नहीं बनता। आप अहिंसक हैं, आप की शरण में होने के कारण मैं भी सदा अहिंसक ही रहना चाहता हूँ। इस प्रकार हे पिता, मैं सदा अहिंसक रहते हुए तेरी शरण में रहना चाहता हूँ। यह कहा भी गया है कि जो भी व्यक्ति अध्यात्म उन्नति के मार्ग पर चलता है, लोकहित के कार्यों में लगा रहता है, वह प्रभु सदा उसका ध्यान रखते हैं। वह वास्तव में उस पिता की शरण में ही होते हैं और पिता की रक्षा करने की व्यवस्था करते हैं।

यह सब करने से हे जीव ! तू प्रभु की जिह्वा, प्रभु की वाणी बन गया है। इसका भाव यह है कि तू प्रभु के संदेश और उपदेश को प्राणी मात्र तक देने वाला बन गया है। अब तेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य यह है कि तू परमपिता परमात्मा के संदेश को सर्वत्र पहुंचाने का कार्य कर। तू अपने जीवन की सर्वोत्तम आहुति देते हुये इस कार्य में लगा रह। अपने जीवन को मधुर बना तथा प्रभु की सर्वा प्रजा को मधुरता पूर्वक, मीठास भरे शब्दों से प्रभु के उपदेश देने का कार्य निरन्तर चिरकाल तक करने वाला बन। इस प्रकार तू प्रभु के संदेश वाहक बन कर उसके लिए कार्य कर।

अब यह संदेश वाहक प्रभु का संदेश देते हुए भी प्रभु को अपनी प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे प्रभु आप का मुझ पर सदा आशीर्वाद बना हुआ है, मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब आप ही के कारण से है। इसलिए यह ही उत्तम है कि आप मेरे ही हो जावो। मुझे पता नहीं कि मैं कब प्रकृति के मोह जाल में इसकी माया में फंस जाऊँ, इसलिए आप मेरे हो जावो तथा मुझे इस माया से बचाये रखें। इस प्रकार मैं सदा आप ही की बनकर रहूं। जो शक्तियां आपने मेरे लिए आवश्यक बतायी है, उन सब शक्तियों को पाने के लिए मेरे में सामर्थ्य आवे। ऐसे सामर्थ्यमय का मैं स्वामी बनूं। मैं सदा ऐसा उपाय करूं कि मेरा प्रत्येक कर्म यज्यमय बन जावे। मेरा प्रत्येक कार्य दूसरों के लिए ही हो। यहां तक कि मैं स्वयं ही यज्य का रुप धारण कर लूं, यज्य ही बन जाऊँ।

मेरी एकमात्र यही चाहना है कि मैं दिव्य गुणों को धारण करूं, इनसे युक्त होऊँ। हे प्रभु ! आप मेरे हैं और मैं तुम्हारा हूँ। मेरी यही कामना है कि मैं सदा ही आप ही का बना रह कर जीवन बिताऊँ। हे पिता ! आपको पाने से हमारी सब शक्तियाँ बढ़ती है, हमारे सब कर्म यज्ञ के समान बन जाते हैं तथा हम पवित्र बनते हैं, जब की प्रभु आपसे दूर होने से हमें कुछ भी मिलने वाला नहीं। इसलिए हम सदा उस प्रभु के आंचल में ही रहे।

पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशांबी, २०१०१०, गाजियाबाद

आत्म ज्ञान भी जरूरी है

इस संसार में जानने योग्य अनेक बातें हैं। विद्या के अनेकों क्षेत्र हैं, खोज के लिए, जानकारी प्राप्त करने के लिए अमित मार्ग है। अनेकों विज्ञान ऐसे हैं जिनकी बहुत कुछ जानकारी प्राप्त करना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। क्यों ? कैसे ? कहाँ? कब ? के प्रश्न हर क्षेत्र में फेंकता है। इस जिज्ञासा के भाव के कारण ही मनुष्य अब तक इतना ज्ञान सम्पन्न और साधन सम्पन्न बना है। सचमुच ज्ञान ही जीवन का प्रकाश स्तम्भ है। जानकारी की अनेकों वस्तुओं में से अने आपकी जानकारी सर्वोपरि है। हम बाहरी अनेकों बातों को जानते हैं या जानने का प्रयत्न करते हैं पर यह भूल जाते हैं कि हम स्वयं क्या हैं ? अपने आपका ज्ञान प्राप्त किए बिना जीवन का क्रम बड़ा डाँवाडोल, अनिश्चित और कंटकाकीर्ण हो जाता है। अपने वास्तविक स्वरूप का जानकारी न होने के कारण मनुष्य न सोचने लायक बातें सोचता और न करने लायक कार्य करता है। सच्ची सुख शान्ति का राजमार्ग एक ही है और वह है "आत्म-ज्ञान"।

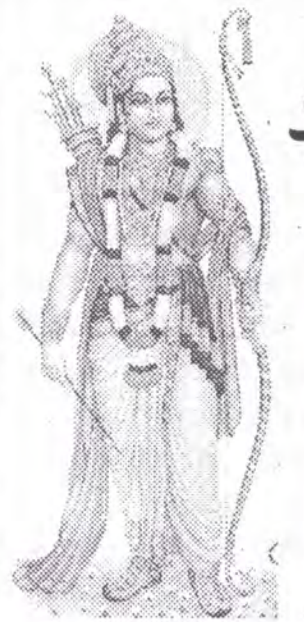

विजयादशमी पर्व पर विशेष

श्रीराम का 'मन्यु'

– मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति, एम.ए.

हम सब राम को मानते हैं।

अतीत चिरस्मरणीय

अपने अतीत को कभी भी भुलाना नहीं चाहिए। गौरवशाली भूत, वर्तमान को स्वर्णिम बनाने हेतु ऊर्जा प्रदान करता है। वर्तमान में खड़े होकर अतीत को स्मरण करते हुए भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बनाने का सतत् प्रयत्नशील होना चाहिए। जो इस मौलिक सिद्धान्त का ध्यान रखकर आचरण करते हैं वे अपना भविष्य स्वर्णिम बनाने में सफल होते हैं।

किन्तु राम की बातें नहीं मानते।

अनेक विद्वानों का यह कथन अत्यन्त सारगर्भित है कि जो इतिहास जितना पुराना होता है वह उतना ही गौरवशाली होता है। विश्व के अनेक देशों में चाहे यह तथ्य सही सिद्ध न होता हो, परन्तु विश्व के इस प्राचीनतम देश 'भारत' पर उपरोक्त कथन अकारण सत्य है। ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक कूटनीतियों ने भारत में हीनता का प्रभाव प्रचारित करने के लिए हमारे महापुरुषों, भारतीय वैदिक धर्म, संस्कृति सभ्यता, परम्पराओं और रीति-रिवाजों का बड़ा उपहास किया। दर्दजश हमारे ही देश में इन विदेशियों के विचारों के समर्थक कुछ कथित तथा विद्वान उनकी हाँ से हाँ मिलाने लग गये। ऐसे देशद्रोही तत्त्व शासकों का उच्छिष्टखनि और चाटने में ही अपने भाग्य को सराहने लगे। यहां तक कि अपने उज्ज्वल अतीत, ऋषि-मुनियों तथा महापुरुषों के अस्तित्व से भी इंकार करने में शर्म नहीं महसूस करते। विदेशी भी चाहते थे। प्रो. मेक्समूलर तथा लार्ड मैकाले भी यही चाहते थे। डेर्विन ने सोचने की स्थिति बदल दी।

इस संबंधों में १९वीं शताब्दी में उत्पन्न अनेक मनीषियों जैसे राजाराममोहनराय, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द घोष, लोकमान्य गंगाधर तिलक तथा गांधी ने राम, कृष्ण, हनुमान, सीता, सावित्री, माता कौशल्या, देवकी, मातुश्री का स्मरण कराया। इसके पश्चात् आने वाली पीढ़ी ने इस विषय पर विचार करना छोड़ दिया। इसे एक विडम्बना ही करेंगे कि हम इन पुरुषों को समय-समय पर याद करते हैं, परन्तु इनके आदर्श, उत्तम आचरण, शिक्षा, उपदेशों पर उचित मात्रा में ध्यान नहीं देते हैं। यह स्मरण हमारा अधूरा है और अपूर्ण है। यह आचरण शुभ नहीं है। यह हीनता की मनोवृत्ति बदलनी होगी।

हमारी भारतीय आर्य (हिन्दू) जाति का एक विशिष्ट गुण यह है कि एक बार ग्रहण किये ये रिवाज, पर्व, उत्सव और समारोह मनाये जाने में एक निरन्तरता बनी रहती है। इस निरन्तरता में समय चक्र के कारण अनेक आवरण आ जाने पर भी रूढ़ियों के रूप में यह पूर्ववत चलते रहते हैं और कालान्तर में उन पर्वों की मूल आत्मा के ऊपर धूलिमा चढ़ जाती है। जाति में नई जागृति और क्रांति लाने के लिए उन पर्वों का मूल तथा वास्तविक कथानक प्रचारित करने का यदि प्रयास किया जाता है तो नवीनता को ग्रहण करने में कोई रूचि नहीं ली जाती। इसी अन्ध-परम्परा का नाम पौराणिक मानसिकता है। इस सामाजिक सिद्धान्त का मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के कार्य-कलापों से गहरा और अटूट संबंध है। सत्य की तीव्रगति के कारण राम से संबंधित दो घटनाएं आंख

मूंदकर जोड़ दी गई है । ***(क) अश्विन शुक्ल १० को भगवान राम ने लंका-नरेश रावण को मार कर विजय प्राप्त की थी, इस कारण इसी तिथि को विजयादशमी पर्व (दशहरा) मनाया जाता है । (ख) कार्तिक अमावस्या को भगवान राम को अयोध्या में प्रत्यावर्तन (लौट आना) अथवा पुनरागमन हुआ था । इसकी खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के असंख्य दीपक जलाये थे । तभी से यह दीपावली पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है ।***

यह स्मरण रखने योग्य बात है कि भगवान राम का वास्तविक जीवन चरित्र का मूलाधार महर्षि वाल्मीकि रचित 'वाल्मीकि रामायण' है, जो कि उनके ही कार्यकाल में रची गई थी। इस घटना और ग्रंथ की रचना नौ लाख वर्ष पूर्व हुई थी। इसी सन्दर्भ में १५वीं शताब्दी में अकबर के राज्यकाल में हुए सगुणोपासक सन्त तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' की रचना कर विदेशी मुगलों के अत्याचारों तथा अकबर की धूर्ततापूर्ण कार्यवाईयों से इस विशाल हिन्दू जाति (आर्यों) की अस्मिता की रक्षा की थी। यद्यपि विषय वस्तु की दृष्टि में ये दोनों ग्रन्थ अपने-अपने समय में अति महत्वपूर्ण जाने जाते रहे हैं, परन्तु अधिक प्रमाणिकता के धरातलपर वाल्मीकि रामायण ही मान्यतापूर्ण है । वाल्मीकि रामायण तत्कालीन सामाजिक वातारण में रची गई थी। इस कारण उपरोक्त वर्णित दोनों घटनाओं की सत्यता और मूल्यांकन वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही होना चाहिए। सन्दर्भ और विषय- वस्तु के आधार पर हम यहाँ विजयादशमी पर्याय दशहरा उत्सव की प्रामाणिकता के विषय में अत्यन्त संक्षिप्त रुप में विचार करेंगे।

बाली वध के पश्चात् सुग्रीव से मैत्री - वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् एक माह की अवधि भी समाप्त हो गई। सुग्रीव की ओर से सीताजी की खोज के संबंध में कुछ भी कार्य नहीं हुआ। सुग्रीव के प्रमाद वश यह उपेक्षा हुई। इससे राम और उनके सहयोगियों में चिंता होना स्वाभाविक था। उसे सचेत करते हुए राम ने सन्देश में कहा -

न स संकुचितः पन्था येन बाली हतो गतः ।

समये तिष्ठ सुग्रीवमा बालिपथ मन्वगाः ।। वा.रा.३०/११

अर्थ : सुग्रीव को सचेत करते हुए राम ने कहा - सुग्रीव ! बाली मारा जाकर जिस रास्ते से गया है, वह आज भी बन्द नहीं हुआ है। इसीलिए तुम अपनी प्रतिज्ञा पर डटे रहो। बाली के मार्ग का तुम अनुसरण मत करो। कहते हैं, समझदार को ईशारा काफी होता है। यह सन्देश पाते ही वह सहम गया और भयभीत हो उठा। भगवान राम को यह मानसिक आवेश 'मन्यु' था। मन्यु और क्रोध में बड़ा अन्तर होता है। शास्त्रकारों के अनुसार क्रोध एक तामसी मनोवृत्ति है। क्रोध के आवेश में बुद्धि लुम्पित (गायब) हो जाती है। मनुष्य क्रोधाग्नि में लाकर अपनी ही हानि अधिक कर लेता है। क्रोधावेश में अज्ञान-अंधेरा छा जाता है।

वहीं क्रोधी व्यक्ति स्वयं की ही मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट कर देता है। उसके क्रोध से चाहे अन्य की हानि न हो, परन्तु वह स्वयं अपनी अपार हानि कर लेता है। क्रोध का ज्वर उतरने पर क्रोधी बहुत पछताता तथा पश्चाताप करता है।

मन्यु :- इसके आवेग के समय विवेक बना रहता है। किसी भी मूल को सुधारने में वह तत्पर रहता है। उसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक तेजिस्वता बनी रहती है। यद्यपि यह भी एक मानसिक विकार है परन्तु सतोगुणी होने के कारण आप्तजन इसका उपयोग कर पाते हैं।

हाँ, तो श्रीराम ने 'मन्यु' के माध्यम से सुग्रीव को सचेत कर दिया कि यह समय वानर जाति के लोग रण-विजय के लिए सेना, हाथी, घोड़ा, अस्त्र-शस्त्र आदि की तैयारी करते हैं। एक तुम हो जो लम्पट और प्रमादी बनकर अपनी ही जाति की स्वस्थ परम्पराओं की उपेक्षा कर रहे हो। शरद ऋतु आने के बाद भी तुमने 'सीता' की खोज का कोई प्रयास नहीं किया। क्या आप स्वयं अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं कर रहे हो ?

ज्ञायतां सौम्य वैदेही यदि जीवति न वा ।

अर्थ - सौम्य सुग्रीव ! पहिले यह पता लगाओ कि विदेह कुमारी सीता अभी जीवित है अथवा नहीं। इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यह रावण कौन है तथा उसका देश कहाँ ? इन दोनों का सम्पूर्ण समाचार शीघ्राति शीघ्र देने का प्रबन्ध करें। इसके बाद ही मैं तुम्हारे साथ मिलकर आगे की कार्ययोजना बनाऊँगा।

इन सारी बातों को जानने के लिए माल्यवान पर्वत पर रहते हुए **स च देशो महाप्राज्ञ यस्मिन् वसति रावणः** श्रीराम ने लक्ष्मण को भेजा। प्रत्युत्तर में सुग्रीव ने कहा - मैने चारों दिशाओं वानर सैनिक भेजा है। उनकी समयावधि एक माह निश्चित कर दी है। कोई भी वानर ५ रातों से अधिक किसी स्थान पर नहीं ठहर सकता। आप निश्चित रहें। अभी आश्विन मास चल रहा है, अतः कार्त्तिक मास के पूर्व ही सौम्यपुरुष राम की सारी चिन्ताएं तथा प्रश्नों के उत्तरों से उनका समाधान कर दिया जायेगा।

वाल्मिकीय रामायण के इस कथानक से स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि आश्विन मास से कार्तिक मास की अवधि में सीता के अनुसंधान तथा देश-विशेष का निश्चय ही नहीं हो पाया था। यह कितने आश्चर्य की बात है कि इस कथानक को तोड़-मरोड़ कर कार्तिक की अमावस्या को ही भगवान श्रीराम का अयोध्या पुनरागमन तथा विजयोत्सव के उपलक्ष्य में दीप मालाओं द्वारा नगर की सजावट आदि कार्य सम्पन्न होना, किसी बुद्धिमान का निश्चय नहीं हो सकता।

अन्धेनैव नीयमानाः यथान्धाः।

हमारा देश भावना प्रधान होने के कारण भावुक है। श्रद्धा के आधार पर भावुकता की अतिरेक स्थिति में कुछ भी निर्णय लेना बुद्धि संगत नहीं होता। उत्तरप्रदेश में रामलीलाएं खेली जाती है। इनमें उपरोक्त प्रसंग को थोड़ा सा मोड़कर जबकि राम द्वारा दक्षिण की ओर प्रस्थान का प्रसंग था, किसी राम-लीला संयोजक ने बिना तर्क किये उसे अयोध्या की ओर पुनरागमन से जोड़ दिया और श्रद्धालु समाज भावना वश कार्तिक मास की अमावस्या को ही विजयोत्सव मानकर दीप मालाएं जलाने लगी।

दूसरे राम को १४ वर्ष का वनवास चैत्र मास से प्रारम्भ हुआ था तो उसका समापन भी चैत्र मास में ही होना संभव है। कार्त्तिक मास नहीं। अतः विजया दशमी पर्व आश्विन शुक्ल १० की अपेक्षा चैत्र मास में मनाया जाना चाहिए। इस बिन्दु पर गंभीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर,
इन्दौर (म.प्र.) ४५२००९

कविता

युग के रावण को ललकारें

वृत्ति आसुरी बढ़ी हुई रावण के युग जैसी,
आज राम के इस भारत में, बनी व्यवस्था कैसी ?
एक नहीं शत-शत सीताओं का होता अपहरण यहाँ,
लज्जा लुटती महिलाओं की, नारी धर्म का हरण यहाँ।

❋

है अन्याय-अनय का होता, धरती पर तांडव नर्तन,
भस्मासुर से बड़े हुए असुरों का होता है वन्दन।
मद्यपान हो रहा अभय हो, करता शासन है सहयोग,
करता है बहुमत भारत का, अभक्ष्यखाद्य ही उपभोग।

❋

मांस-मद्य का सेवन करने से रावण राक्षस कहलाया,
पर नारी पर कुदृष्टि डालने से रावण का हुआ सफाया।
भ्रष्टाचार बढ़ा है अतुलित, अनाचार का राक्षस हंसता,
पशु-वृत्ति से आच्छादित हो, मानव पशुओं सम हंसता।

❋

खर-दूषण की सेनाओं का पड़ा हुआ है भू पर डेरा,
अहिरावण ने धरती पर बिखराया घोर अंधेरा।
टकराएगा कौन दनुज से, कौन करेगा, शर-सन्धान ?
किसमें फिर पौरुष जागेगा ? कौन उठाएगा धनु-बान ?

❋

युवक हमारे राम-लखन बन, युग के रावण को ललकारें,
कागज के रावण के बदले, असली रावण को संहारें॥

- राधेश्याम विद्यावाचस्पति

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़े

महापुरुषों के वाक्यों को पढ़ते समय उनके व्यक्तित्व की गरिमा भी आपको प्रभावित करती है, जिससे अचेतन मन वैसा करने या न करने को विवश हो जाता है। इस प्रकार की बेबसी की स्थिति व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करती है, क्योंकि तब आपके मन के पास मनमानी करने का न तो अवसर होता है न ही सामर्थ्य।

अनुभव में एक बात और आई है कि कभी-कभी आपकी ऐसी शंका का समाधान एक छोटा-सा वाक्य कर जाता है, जिसके लिए आप लम्बे समय से भटक रहे होते हैं। **"देखन में छोटे लागे, घाव करे गंभीर"** वाली इन वाक्यों के साथ लागू होती है। बातचीत करते समय, भाषण देते समय, बहस करते वक्त या लिखते समय जब आप इन वाक्यों द्वारा अपने कथन की पुष्टि करते हैं तो आपकी बात में वजन आ जाता है। आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में इससे सहायता मिलती है। **सुनने-पढ़ने वाले कुएं का मेढक** नहीं समझते।

वैदिक ज्ञान के बिना संसार का और अपने आपका वास्तविक ज्ञान संभव नहीं है। कोई कितना भी पलायन करे किन्तु एक दिन वैदिक ज्ञान का शरण लेना ही पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे ऋषि हुये जिन्होंने वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हुए वेदों को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म बताया है। **रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारी, जहां काम आवे सुई कहा करे तरवारी,** की उक्ति को चिंतन करने से दोनों की उपादेयता समय और स्थान से सिद्ध होती है।

कुटिल काक ....!

तत् काक ! त्वयि मुक्ता, कटु वाक्य वैवर्ण्य धूर्त्तता शुचिता।
यदि विष्ठा कृमि पुष्टे, तत्र न दोषा हि तच्चित्रम् ॥

भावार्थ - किसी ने कौवे को धिक्कारते हुए कहा है - (क्योंकि पक्षियों में कौवे को ही धूर्त्त माना गया है) अरे कौवे! तू इतना फूला क्यों जा रहा है ? आखिर फूलेगा क्यों नहीं ? पाखाने के कीड़े ही तो तूने खाए हैं ? पाखाने के कीड़ों को खाकर भी मोटे ताजे बने तुझ में यदि कटुभाषिता, बहुरंगिता, धूर्त्तता और अपवित्रता न आएगी तो भला और क्या आवेगा ? तू ने किया ही क्या है ? जो लिया है, यदि वही संसार के सामने नहीं रखेगा तो कम आश्चर्य की बात नहीं? यह तो तेरा जन्म-सिद्ध गुण ही है। अभिप्राय, व्यङ्गार्थ यहां बड़ा रोचक निकलता है ? कोई सज्जन पुरुष किसी दुर्जन के द्वारा उत्पीड़ित (त्रसित) होने पर व्यञ्जना में कहता है कि -उसका तो स्वभाव ही यही है। भला वह अपने गुण कैसे त्याग सकता है ? बुद्धिमान पुरुषों को उचित है कि-वह कभी भी नीच व्यक्ति के मुंह न लगे। क्योंकि कहा भी है - स्थानत्यागेन दुर्जनः - दुष्ट के कुचक्रों से बचने के लिए मनुष्य को वह स्थान ही त्याग देना चाहिए जहां उसके साथ नित्य सम्पर्क रहता है। - सुभाषित-सौरभ

'महर्षि दयानन्द ने देश व धर्म के लिए, माता-पिता-बन्धु-गृह व अपने सभी सुखों का स्वेच्छा से त्याग किया।'

वैचारिक

- मनमोहन कुमार आर्य

भारत संसार में महापुरुषों को उत्पन्न करने वाली भूमि रहा है । यहां प्राचीन काल में ही अनेक ऋषि मुनि उत्पन्न हुए, जिन्होंने वेदानुसार आदर्श जीवन व्यतीत किया। इन ऋषियों में से कुछ के नाम ही विदित है। अनेक ऋषि मुनियों ने महान कार्यों को किया, परन्तु उन्होंने न तो अपना आत्म वृत्तान्त ही लिखा और न ही अपनी कोई पहचान ही साहित्य आदि के माध्यम से देश में छोड़ी । समय व्यतीत होने के साथ कुछ ऋषियों ने कुछ ग्रन्थों का सृजन वा रचना की। उनके साहित्य में इतिहास में हुए कुछ प्रमुख ऋषियों के नामों का उल्लेख है। इसी प्रकार से इन ऋषियों के ग्रन्थों पर कुछ अन्य ऋषियों ने भाष्य आदि टीकायें लिख कर अपने समय के जन साधारण का कल्याण किया। इनमें भी कुछ ऐतिहासिक ऋषियों के नाम सुरक्षित है। महर्षि बाल्मिकी ने रामायण लिखकर स्वयं, श्रीरामचन्द्र जी, रामायणकाल के कुछ ऋषियों व राजाओं आदि के नाम व इतिहास सुरक्षित किए हैं। रामायण के बाद सबसे बड़ा व प्रमुख इतिहास ग्रन्थ हमारे पास महाभारत है। इसमें उस काल के अनेक राजाओं व विद्वानों का वर्णन है, जिनमें से एक अति प्रतिष्ठित महापुरुष श्रीकृष्ण है । महाभारत काल के बाद युधिष्ठिर के वंशज अनेक राजा महाराजा हुए। इन सबके विस्तृत नाम व वृत्तान्त आदि तो सुरक्षित नहीं है, परन्तु महर्षि दयानन्द की कृपा से सत्यार्थ प्रकाश में एक सूची मिलती है जिसमें राजा युधिष्ठिर की वंश परम्परा में क्षेमक तक राजाओं व उनके राज्यकाल का विवरण वर्ष, महीनों व दिन तक की गणना किया हुआ मिलता है। यह कुल ३० पीढ़ियों के १७७० वर्ष ११ मास व १० दिनों का संक्षिप्त व संकेतित इतिहास व विवरण है । इसके बाद के राजाओं से लेकर सम्वत् १२४९ विक्रमी तक राजा यशपाल के शासनकाल तक का विवरण सत्यार्थ प्रकाश में अंकित सूची में है। इस प्रकार अब से लगभग ८२३ वर्ष पूर्व तक के राजाओं का विवरण महर्षि दयानन्द की कृपा से आज देश की जनता के लिए सुलभ हुआ है। जब भारत की ज्ञान विज्ञान से युक्त वेदकालीन प्राचीन धर्म व संस्कृति पर विचार करते हैं तो हमें अनेक धार्मिक ग्रन्थों के रचयिता ऋषि मुनियों सहित आदर्श राजा श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, राजनीति के आचार्य महात्मा चाणक्य, स्वामी शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द जी का ज्ञान होता है, जिन्होंने अपने अपने समयों में महान कार्य कर इस देश व विश्व के धर्म व संस्कृति के वातावरण को प्रभावित किया। आज के इस लेख में हम स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर कुछ विचार कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने सन् १८४७ में अपनी आयु के बाइसवें वर्ष में सच्चे शिव, मृत्यु पर विजय और सद्ज्ञान की प्राप्ति के लिए गृह त्याग किया था। सन् १८६० में वह मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द की कुटिया में पहुंचे और लगभग ३ वर्षों में उनसे आर्ष व्याकरण, वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन पूरा कर सन् १८६३ में गुरु की प्रेरणा व आज्ञा से देश व धर्म के सुधार के लिए कार्यक्षेत्र में प्रविष्च हुए। उन्होंने नवम्बर १८६९ में काशी नरेश की मध्यस्थता में काशी के

लगभग ३० विद्वानों से मूर्तिपूजा पर इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया था। इस शास्त्रार्थ में लगभग ५० हजार लोग उपस्थित थे। पौराणिक विद्वान मूर्तिपूजा को वेद विहित सिद्ध नहीं कर सके थे। तदन्तर उन्होंने धर्म व वेद प्रचार के निमित्त मौखिक उपदेश व वार्तालाप सहित शास्त्रार्थ आदि द्वारा प्रचार किया और अपने मन्तव्यों के प्रचारार्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि उन्होंने हिन्दी की महत्ता के कारण इतिहास में प्रथमवार धार्मिक विषयों को संस्कृत के स्थान पर हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया जिसका सुप्रभाव यह हुआ कि सामान्य व्यक्ति भी धर्म के मर्म को जानने में समर्थ हुआ और धर्म पर पण्डितों का एकाधिकार समाप्त हुआ। वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए उनके प्रमुख कार्यों में १० अप्रेल सन् १९७५ को मुम्बई के काकरवाड़ी स्थान पर प्रथम आर्यशमाज की स्थापना सहित सत्यार्थ प्रकाश और वेद भाष्य का प्रणयन आदि कार्य प्रमुख थे।

स्वामी जी जहां जहां वेद प्रचार जाते थे, उनके प्रवचनों में सम्मिलित लोगों में से अनेक उनसे अपना जीवन वृत्तान्त सुनाने का निवेदन करते थे। उन्होंने अगस्त १८७५ में पूना में दिये गये अपने प्रवचों में से एक प्रवचन में अपने जीवन का वृत्तान्त प्रस्तुत किया था। इसके बाद थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल अल्काट की प्रेरणा व निवेदन पर उन्होंने अप्रैल १८७९ में अपना संक्षिप्त जीवनवृत्त लिखा। इस जीवनवृत्त के आरम्भ में उन्होंने लिखा है कि गृह त्याग के प्रथम दिन से ही जो मैंने लोगों को अपने पिता का नाम और अपने कुल का स्थान बताना अस्वीकार किया इसकी यही कारण है कि मेरा कर्त्तव्य मुझे इस बात की आज्ञा नहीं देता। यदि मेरा कोई सम्बन्धी मेरे इस वृत्त से परिचय पा लेता तो वह अवश्य मुझे ढूंढने का प्रयत्न करता। इस प्रकार उनसे दो-चार होने पर मेरा उनके साथ घर जाना आवश्यक हो जाता। सुतरा एक बार पुनः मुझे धन हाथ में लेना पड़ता अर्थात् मैं गृहस्थ हो जाता। उनकी सेवा-शुश्रुषा भी मुझे करनी योग्य होती। और इस प्रकार उनके मोह में पड़कर सर्व सुधारों का वह उत्तम काम जिसके लिये मैंने अपना जीवन अर्पण किया है, तथा जो मेरा यथार्थ उद्देश्य है, जिसके अर्थ-स्वजीवन-बलिदान करने की किंचित चिन्ता नहीं की, और अपनी आयु (जीवन) को बिना मूल्य जाना, और जिसके अर्थ मैंने अपना (अपने जीवन का) सब कुछ स्वाहा करना अपना मन्तव्य समझा, अर्थात् देश का सुधार और धर्म का प्रचार, वह (मेरा) देश पूर्ववत् अन्धकार में पड़ा रह जाता। यहां महर्षि दयानन्द ने प्रसंगवश अपनी मृत्यु से साढ़े चार वर्ष पहले अपने जीवन का उद्देश्य बताने के साथ अपने मन की कुछ निजी बातें भी प्रकट की है जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है और वही हमारे लेख का मुख्य विषय है।

उपर्युक्त पंक्तियों में महर्षि दयानन्द कह रहे हैं कि उन्होंने सर्व सुधारों के उत्तम काम के लिए ही अपना जीवन अर्पण किया है और यही उसका उद्देश्य है। आगे स्पष्ट कर सर्व सुधार से तात्पर्य उन्होंने देश का सुधार और धर्म का प्रचार बताया है। महर्षि दयानन्द के इस वाक्य से ज्ञात होता था कि उनके समय में देश अनेक क्षेत्रों में अन्धविश्वास, रुढ़िवाद एवं पाखण्ड आदि अनेक विकृतियां विद्यमान थीं जिनसे देश कमजोर व अवनत हो गया था। इनका सुधार कर वह देश को सशक्त बनाना चाहते थे। देश का एक उत्कृष्ट वेदविद्यावान ब्रह्मचारी, अनेक शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमताओं से युक्त ऋषि तुल्य व्यक्ति देश के सुधार के लिए बिना किसी निजी प्रयोजन अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है, यह इतिहास की अपने प्रकार की अपूर्व घटना है। यहां हमें श्री रामचन्द्र जी की स्मृति हो आई। उन्होंने अपने पिता के वचनों की रक्षा के लिये वन जाना स्वीकार किया था। वहां प्रयोजन पिता के वचन थे। उनका विवाह चुका था और वनवास की अवधि में भी उनके अपने परिवार से सम्बन्ध बने रहे थे। श्रीकृष्ण जी ने महाभारत के युद्ध में प्रमुख भूमिका निभाई। इसका कारण उनके पाण्डवों से संबंध थे। वह वैदिक विद्वान्, योगी और राजनीतिज्ञ थे और सत्य व धर्म की रक्षा के लिये एक राजा होकर वह इस युद्ध में प्रवृत्त हुए थे। श्रीकृष्ण जी ने विवाह भी किया और प्रद्युम्न के रुप में एक संस्कारित योग्य सन्तान को भी प्राप्त किया था। लेकिन स्वामी दयानन्द देश व धर्म के लिए अपने माता-पिता, धन, सम्बन्धों, विवाह, सन्तान, शारीरिक सुख व अपने जीवन आदि सभी कुछ को

ईश्वर, देश व धर्म के लिये त्याग कर रहे हैं। अपने महानतम् उद्देश्य की पूर्ति के प्रति वह श्री रामचन्द्र जी व श्री कृष्ण जी के समान ही योग्य, सक्षम व समर्थ थे। इस कार्य को उन्होंने प्राणपण से किया। इसमें उन्हें आंशिक सफलता भी मिली और अपने उद्देश्य के लिये ही उन्होंने मात्र ५८ वर्ष ८ महीने के अल्प जीवन में ही अपना बलिदान किया। उन्होंने जो कार्य किया वह इतिहास में अभूतपूर्व है। स्वामी दयानन्द के कार्यों व बलिदान का महत्व इश कारण भी है कि भारतवासी धर्म के यथार्थ व सत्य स्वरुप को भूल चूके थे। ईश्वर के स्वरुप व उपासना का ज्ञान भी भारतवासियों को नहीं था। यज्ञ का स्वरुप विकृत कर दिया गया था और सत्य स्वरुप का किसी को ज्ञान ही नहीं था। इसी कारण बौद्धमत अस्तित्व में आया और सनातन वैदिक धर्म का पराभव हुआ। देश में बाल विवाह होते थे जिससे विवाहित बालक-बालिकाओं की मृत्यु दर वृद्धि को प्राप्त हो रही थी। निस्तेज व अल्पजीवी सन्तानें उत्पन्न होती थीं। विधवाओं की दुर्दशा हो रही थी। स्त्रियों व दलितों के अध्ययन के अधिकारों तक को छीन लिया गया था। वेदों के यथार्थ विद्वान होना बन्द हो गये थे। सभी मनुष्यों का धर्म एक है। इस एक धर्म की अनेकानेक अनधविश्वासों से युक्त शाखायें एवं प्रशाखायें उत्पन्न हो गई थीं, जो भोले-भाले लोगों का शोषण करती थीं। ब्राह्मण वर्ण व वर्ग को सभी प्रकार के अधिकार थे, अन्याय करने पर भी दण्ड का कोई विधान नहीं था और अन्यों पर अन्याय व शोषण किया जाता था। देश को कृत्रिम जन्मना-जाति व उपजातियायें में बांट दिया गयआ था, जिससे देश कमजोर हुआ व हो रहा है। इन सब सामाजिक दोषों को दूर करने के साथ स्वामी दयानन्द ने वेदों का सत्य स्वरुप प्रकाशित किया, स्त्रियों व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार दिया, सभी सामाजिक विषमतायें एवं अन्याय दूर किये और ईश्वर का सच्चा स्वरुप प्रस्तुत कर उसकी सच्चा उपासना और यज्ञों का उद्धार किया। देश व विश्व का इतना उपकार करने पर भी देश के लोगों ने उनके उपकार बदला उनका अपमान, विरोध, अनेक बार उन्हें विष देकर तथा उनके प्राण लेकर लिया। हमें समझ में नहीं आता कि हम अपनी जाति को क्या कहे जो अपने ही त्राता के प्राणों का घात करती है। यहां यह उक्ति चरितार्थ होती है **'तू खाक उसे करना चाहे जो तेरा बेड़ा पार करे।'** अतः स्वामी दयानन्द ने सर्वसुधारों के लिये अपने प्राण देकर अपने वचनों को सत्यसिद्ध किया, जिसका उल्लेख उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया था। हम अनुभव करते हैं कि उनके उपकारों से देश कभी उऋण नहीं हो सकता।

अपने वचनों में स्वामी दयानन्द जी ने यह भी कहा कि सर्वसुधारों के अर्थ उन्होंने स्वजीवन-बलिदान करने का किंचित विचार व चिन्ता नहीं की, और अपनी आयु (जीवन) को बिना मूल्य जाना, और जिसके अर्थ उन्होंने अपना सब कुछ स्वाहा करना अपना मन्तव्य समझा, अर्थात् देश का सुधार और धर्म का प्रचार, अन्यथा देश पूर्ववत् अन्धकार में पड़ा रह जाता। महर्षि के यह वाक्य भी उनके जीवन एवं कार्यों पर दृष्टि डालने पर सत्य सिद्ध होते हैं। महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को यह देखकर दुःख होता है कि यह देश सत्य को जानने के प्रति सजग न होकर उदासीन है। सत्य का ग्रहण तो देशवासी तभी कर सकते हैं जबकि इन्हें सत्य गुरुओं का सान्निध्य व मार्गदर्शन प्राप्त हो। इसके लिये तो वैदिक साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता है। अनार्ष ग्रन्थों को पढ़कर इन मत-पन्थ-सम्प्रदाय वादियों की बुद्धि भी इन मतों के अनुकूल हो गई है। मत-मतान्तरों के असत्य विचारों को पढ़ने व सुनने पर भी उसके मन में शंकायें उत्पन्न नहीं होती? सत्य ज्ञान वेद के विरुद्ध सभी मत-मतान्तर अनेक असत्य व मिथ्या बातों का प्रचार करते है और उनके अनुयायी आंखे बन्द कर उन्हें स्वीकार कर लेते हैं जिससे ईश्वर व धर्म के विषय में सर्वत्र अन्धकार छाया हुआ है। अतः हमें महर्षि दयानन्द का तप व पुरुषार्थ पूर्ण सार्थक हुआ प्रतीत नहीं होता। आज भी चालाक व स्वार्थी लोग भोले भाले धर्मभीरु लोगों को शोषण करते हैं। उनमें से कुछ के अनैतिक कार्य भी समाज के सामने आते रहते हैं, परन्तु देश की जनता फिर भी उदासीन रहती है। लोगों की इस मनोवृत्ति और अकर्मण्यता ने भविष्य में सत्य वैदिक धर्म की उन्नति पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। महर्षि दयानन्द के तप व पुरुषार्थ की पूर्ण सफलता न होने से देश के लिए भविष्य में विडम्बना सिद्ध हो सकती है जैसे कि पहले भी बनी है। अतः वेदों के प्रचार-प्रसार की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द के

उन वाक्यों जिसमें उन्होने अपनी भावनाओं को प्रकट किया और वैसा कर धर्म व देशोन्नति के लिए बलिदान हुए, नमन करते हैं। आज की परिस्थितियों में धर्म व देश सुधार के लिए हमें सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन और उसके अनुरुप सत्य मान्यताओं का प्रचार ही अभीष्ट लगता है। हम आशा करते हैं कि देश के प्रबुद्ध जन महर्षि दयानन्द के वैदिक साहित्य का निष्पक्ष रुप से अध्ययन कर धर्म व संस्कृति की रक्षा तथा देशोन्नति के लिए अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर उसका पालन करेंगे।

आज की परिस्थितियों में प्रासंगिक विद्वान् पं. राजवीर शास्त्री जी की जुलाई १९९८ में लिखी पंक्तियां प्रस्तुत है। वह लिखते है कि स्वाध्यायशील पाठकों और वेदभक्त आर्यपुरुषों के समक्ष दयानन्द-सन्देश मासिक पत्र का श्रावणी पर्व पर वेद-विशेशांक प्रस्तुत करते हुये हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है वहीं हमें वेद के प्रति अनास्था रखने वालों के प्रति सजगता एवं सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहन भी मिल रहा है। उन्नसवीं शताब्दी में हमारे अन्दर वेद-ज्योति ने सन्मार्ग दर्शन होने से हमें सचेत किया था, आज वही ज्योतिक जिसने समस्त मतमतान्तर-वादियों के भीषण दुर्गों को ध्वस्त करके सत्य को ग्रहण करने के लिए उद्यत किया था, उन्हीं वेदानुयायियों को शिथिल, उपेक्षित, उत्साहहीन देखकर अत्यन्त दुःख भी होता है। इसका कारण स्वाध्यायशील व श्रद्धाहीनता भी है किन्तु **अर्थ और काम की आसक्ति प्रमुख है**। आज का मानव भौतिक चकाचौंध में इतना अधिक व्यस्त हो गया है कि जो आर्यजनता एक सजग प्रहरी बनकर काम कर रही थी, वह भी उदासीन हो गयी है। महर्षि मनु ने सृष्टि के आरम्भ में ही आर्य जाति को सचेत करते हुये लिखा था - **अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते। धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥** अर्थात् **धर्म का ज्ञान उन व्यक्तियों को नहीं होता, जो अर्थ और काम अथवा कांचन कामिनी में आसक्त है और धर्म की जिज्ञासा रखने वालों को वेद ही परम प्रमाण है**। महर्षि दयानन्द ने धर्म की जिज्ञासा को शान्त करने वाले परम प्रमाण वेदों को ही अपने प्रचार का मुख्य साधन बनाया था। आज भी वेद पूर्णरुपेण प्रासंगिक एवं व्यवहारिक है। वेदविहित व वेदानुकूल ही धर्म और वेद विरुद्ध सब कुछ अधर्म का पाप है।

लेख को विराम देते हुए आर्य महाकवि श्री वीरेन्द्र कुमार राजपूत की महर्षि दयानन्द पर कुछ पंक्तियां प्रस्तुत है -

जिसने गुरुदेव चरित्र पढ़ा,
निज मानस जन्म सुधार लिया।
वह लौह सुवर्ण बना जिसने,
इस पारस को पहचान लिया।
पथ-भ्रष्ट अमीचन्द था,
जिसका ऋषि ने हाथ संभाल लिया,
गुरु ने जग से चलते-चलते
जग को गुरुदत्त प्रदान किया॥

पता - १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् कैसे हो साकार

पहले स्वयं को आदर्श बनाते हुए सभाओं द्वारा कार्यकर्त्ताओं को निश्चित व समयबद्ध कार्यक्रम देना होगा, सामाजिक हित साधने वाले संघर्ष के लिए आदेश करना होगा, पाखंड और अन्धविश्वास को हटाने जन आन्दोलन करना होगा, शिरोमणि सभा की सक्रियता तेज करनी होगी जिससे प्रान्तीय संगठनों में कर्मठता बढ़ेगी आर्यसमाजों को सिर्फ श्रावणी एवं वार्षिकोत्सव की कैद से बाहर निकालकर सामयिक एवं प्रासङ्गिक बनाना होगा समृद्ध आर्य समाजें नशामुक्ति जैसे अभियानों में युवाओं को जोड़ सकते हैं। व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी चौक चौराहे या सार्वजनिक स्थलों पर करना होगा। कराटे का शिविर लगाकर युवा शक्ति को प्रोत्साहित करना होगा। समृद्ध समाज के माध्यम से गरीब छात्रों के निवास भोजन एवं शिक्षा की व्यवस्था द्वारा युवाशक्ति को आकृष्ट करना होगा।

- सम्पादक

वृद्धत्व वरदान है, अभिशाप नहीं

१ अक्टूबर-अन्तर्राष्टीय वृद्ध दिवस

– पंडित राकेश आर्य

'वृद्ध' शब्द साधारण : शक्तिहीनता, गतिशून्यता और जर्जरता का प्रतीक माना जाता है। संस्कृत में एक शब्द है - 'वृद्धि'। यह शब्द सामान्यतः बढ़ोतरी, वृद्धि या उन्नति का सूचक है। आचार्य पाणिनी ने इसी शब्द से व्याकरण शास्त्र का आरम्भ किया है। आचार्य के अनुसार वृद्ध वही है जो वृद्धि को प्राप्त कर लें। **'वृद्धिर्यस्य सोऽयं वृद्धः।'** इस दृष्टि से वृद्ध शब्द गरिमा तथा पूर्णता का परिचायक है। भारतीय संस्कृति में वृद्ध को कभी भी असम्मान की दृष्टि से नहीं देखा गया है। भारतीय मनीषियों ने वार्धक्य को हमेशा ससम्मान स्मरण किया है। भारत की परम्परा ने वृद्धों में ज्ञान और अनुभव की वृद्धि को देखकर उन्हें लोकोपकारक माना है। इसलिए ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध इत्यादि शब्दों का प्रचलन हुआ। वृद्धों की गरिमा को प्रकट करते हुए किसी ने कहा है -

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

यहां वृद्धों को अभिवादन करने से आयु, विद्या, यश और बल के बढ़ने की बात कही गई है। वृद्ध शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसकी गरिमा हम वृद्धों ने ही कम की है। लक्ष्यहीनजीवन और वर्णाश्रम व्यवस्था के लोप ने वृद्धों की स्थिति को अत्यन्त दयनीय बना दिया है। उनका सम्मान न तो घर में है, और न ही समाज में।

वृद्धों की समस्याएँ -

वृद्धों की समस्याएँ हैं -१. अकेलापन २. गिरता स्वास्थ्य ३. आर्थिक स्थिति ४. समय या सेवानिवृत्ति।

वृद्धों की समस्याओं पर सरकार और समाज में चर्चा होती रहती है। कभी कानून बनाने की बात होती है, तो कभी पेंशन देने की। चित्रपट पर 'बागबान' और 'मुन्नाभाई' समाज में वृद्धों की स्थिति को यदा-कदा उठाते भी हैं, किन्तु समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल हो रही है। भारतीय समाज में 'वृद्धाश्रम' बनाये जा रहे हैं, यह वृद्धों के साथ सबसे बड़ा अन्याय है। यहाँ वानप्रस्थ हो, सन्यासाश्रम हो, जहां वृद्ध स्वेच्छा से जीवन में तप और ज्ञान की वृद्धि के लिए जाये। वृद्धाश्रम मजबूरी है इच्छा नहीं, मजबूरी को आदर्श नहीं कहा जा सकता।

समाधान - सीनियर सिटीजन्स पर आयोजित सभी सेमिनार आरोप और प्रत्यारोप में निकल जाते हैं। समस्याएं यथावत् रहती है। हमें अपनी समस्याओं का समाधान खुद ही निकालना होगा।

१. वृद्ध अकेले रहने की प्रवृत्ति को छोड़ें। परिवार के सदस्यों और समाज के वर्गों मेल जोल बढ़ाये। इस उम्र में अपनी सामाजिक सक्रियता को धीरे-धीरे बढ़ाये। एक घर में कैद होने की प्रवृत्ति से वृद्ध असुरक्षित हो रहे हैं। भ्रमण, मनोरंजन तथा समाचार पत्रों को पढ़ना न भूलें। भावी-पीढ़ी के साथ अधिक से अधिक समय बितायें। जहां तक संभव हो, आत्मनिर्भर बने रहें।

२. स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। योग-साधना को अपनी दिनचर्या का अङ्ग बनायें। अपने विचारों में सकारात्मकता लायें। आध्यात्मिक सत्संग करें। नकारात्मक विचारों को दूर रखें। व्यवहार को लचीला बनाये रखें। परिजनों की अनदेखी या छोटी मोटी गलतियों को 'नाक' का मुद्दा न बनायें।

३. अपने जीवन की प्लानिंग ऐसे करें कि उम्र के इस पड़ाव में परावलम्बी न बनना पड़े। जीवन को संयमी बनायें, फिजूल खर्ची से बचें। इंश्योरेंस, पेंशन या अपनी अचल सम्पत्ति का एक निश्चित हिस्सा स्वयं तथा अपने जीवन साथी के लिए अवश्य रखें।

४. सेवानिवृत्ति को सेवाप्रवृत्ति बनायें। साधारणतः व्यक्ति सेवा निवृत्ति को अपनी सेवा या अपने कार्यों की समाप्ति मान लेता है, इसलिए समय काटने लगता है और बुढ़ापा हावी होने लगता है। सतत क्रियाशीलता हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाती है। अमिताभ बच्चन और देवानन्द के सदाबहार होने का यही रहस्य है। वार्धक्य में धार्मिक सेवा केन्द्रों, सत्संगों तथा सामाजिक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करें।

स्वामी रामतीर्थ एक बार विदेश प्रवास में थे। उन्होने कांपते हुए एक वृद्ध के हाथों में एक किताब देखी। वह वृद्ध कुछ सीखने का प्रयास कर रहा था। उसकी उम्र ८०-९० के आसपास थी, स्वामी जी ने उससे पूछा तो उस वृद्ध ने बताया कि वह चीनी भाष सीख रहा है। चीनी भाषा दुनिया की कठिनतम भाषाओं में है। उम्र के इस पड़ाव में उसे लिखने की इच्छा यह अप्रतिम जिजीविषा का एक उदाहरण है। स्वामी जी ने अपनी डायरी में लिखा है - इसे वृद्ध कौन कह सकता है। इसकी जिजीविषा युवाओं से अधिक प्रबल है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रसंगवश सत्यार्थप्रकाश में एक श्लोक उद्धृत किया है - **न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।**

ऋषि की दृष्टि में झुर्रियों के आ जाने उम्र के बढ़ जाने से आदमी वृद्ध नहीं होता- ज्ञान, तप और अनुभव की वृद्धि से ही व्यक्ति वृद्ध बनता है, इसीलिए वयोवृद्ध से ज्ञानवृद्ध बड़ा होता है। आइये, इस अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर संकल्प लें कि हम 'वृद्ध' बनेंगे, बूढ़े नहीं। जीवन भर ज्ञान, तप, अनुभव, सत्य, पुण्य, तेज, बल और यश की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

वृद्धत्व वरदान है, अभिशाप नहीं।

पता : सुमन ट्रेडर्स, नेहरु नगर, रायपुर (छ.ग.)

वृद्ध दिवस पर विशेष

: मानव जन्म :-

- सुभाषनारायण भालेराव
'गोविन्द'

**वृद्धाश्रम में दादी दादा जी से कहन लगी
कहिये न ?
आप जिन्दगी जीना किसलिये
बच्चे और बहुयें और किसके लिये ?
यहां कौन है अपना? और कौन है पराया ?
कोई भी नहीं पूछता, परिवार है तो बेकार
हमारा शरीर अब थका जा रहा है
अपनी लड़की भी है पर ना के बराबर
उसकी विदाई से वह अब अपनी नहीं
वह होकर भी पराई है
आखिर दादा जी ने दादी जी से कहा
जो हो गया उसे भूलो आगे की देखो, सोचो
दुःखी जीवन क्यों न हो मत हताश हो तुम
मनुष्यों को अब जोड़ दोष देना तू अब छोड़
अच्छे लोग भी मिलेंगे मीठा मीठा अब तू बोल
संकट पर हावी होंगे दुर्बल लोगों के साथ देगें
विकलांगो को हाथ देंगे वो ऊपर वाला जो है
एक ही करने वाला है
जो करवाता है कर्ता है
परीक्षा ले रहा है जीवन की
मानव जीवन में जीवन एक बार देकर
वृद्ध जीवन एक सबक है
जीवन जीना किसलिये
अपना अर्न्तमन से सवाल उठता है
सत्कर्म करो आनन्द करो उत्तर की उम्मीद छोड़ो
मानव जन्म को खुशी खुशी में
आनंद से स्वीकार करो।**

पता : अवन्तिका ए-३८, न्यू नेहरु कालोनी,
ठाटीपुर मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

प्रेरणा

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

ले. डॉ. भवानीलाल भारतीय

५ अक्टूबर जयन्ती

"भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए यदि बल प्रयोग करने की भी आवश्यकता हो तो ऐसा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए ।" इस महत्वपूर्ण उक्ति को क्रियात्मक रूप में चरितार्थ करने की प्रेरणा देने वाले सशस्त्र क्रान्ति के आद्य प्रवर्तक पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के विषय में हमारे देशवासियों को जानकारी बहुत कम है। इसका कारण तो यह है कि श्यामजी अपने जीवन के अन्तिम ३३ वर्ष इंग्लैण्ड तथा स्विट्जरलैण्ड में ही व्यतीत किये और उनकी मृत्यु भी विदेश की धरती पर ही हुई। अतः यहां के लोग उनके विचारों, धारणों एवं कार्यों के सम्बन्ध में बहुत कम जान पाये। एक अन्य कारण यह भी रहा कि श्यामजी का राजनैतिक जीवन सैद्धान्तिक अधिक रहा, व्यावहारिक कम। उन्होने जिन सिद्धान्तों का निरूपण किया उन पर चलने के लिए अन्यों को तो प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया, किन्तु स्वयं एक सिद्धान्त-स्थापक आचार्य के रूप में ही रहे। तथापि, यह स्वीकर करना ही होगा कि वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगरा तथा अनेक क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कृत्यों के पीछे श्यामजी की अदम्य प्रेरणा कार्य कर रही थी।

यहां प्रश्न होता है कि श्यामजी की देशभक्ति तथा स्वतन्त्रता के प्रति उनकी अदम्य इच्छा के पीछे कौन-सी प्रेरणाएँ कार्यरत थीं ? जैसा कि हम उनके जीवन चरित्र में देखते हैं, वे अपनी युवावस्था में ही स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये थे। स्वामी जी से उन्होने एक ओर तो संस्कृत का अद्वितीय एवं अप्रतिम ज्ञान प्राप्त किया तो दूसरी ओर स्वदेशनिष्ठा के दिव्य भावों को भी उनसे ही ग्रहण किया। स्वामी जी के प्रति उनका सम्मानभाव जीवन-पर्यन्त यथावत् रहा और वे अत्यन्त कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण करते थे। इसी प्रकार इंग्लैण्ड में रहकर अध्ययन करते समय, तथा बाद में स्थायी रूप में वहीं बस जने पर, वे यूरोप के महान् चिन्तकों और दार्शनिकों के उदार विचारों से भी प्रेरणा ग्रहण करते रहे। मिल और स्पैन्सर के विचारों का उन पर अमिट प्रभाव था।

श्यामजी के जीवनीकारों को ध्यान करके जीवन के अन्य पहलू की ओर भी गया है। धन के प्रति उनका प्रबल आकर्षण, वित्तोपार्जन की उनकी अदम्य लालसा तथा सांसारिक सुख-सुविधापूर्ण जीवनयापन की प्रबल इच्छा, क्या उन्हें उन क्रान्तिकारियों के गुरु या अनुशास्ता का पद ग्रहण करने का अधिकार देती है जिन्होंने देश की स्वन्तत्रता के लिए तिल-तिल कर अपनी आहुति दी थी तथा स्वाधीनता-यज्ञ में सर्वस्व होम दिया था ? निश्चय ही श्यामजी का जीवन तिलक, अरविन्द और लाजपतराय के सक्रिय राजनैतिक जीवन से तो भिन्न है ही, वे सावरकर, भगतसिंह तथा बिस्मिल जैसे उन क्रान्तिकारियों की कोटि में भी नहीं आते जिन्होंने अपने घर-परिवार, यहां तक कि शरीर को भी मातृभूमि के कष्टों का निवारण करने के लिए समर्पित कर दिया था। तथापि, श्यामजी का भारत की सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का पितामह कहना अत्युक्ति नहीं है। वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हर्बर्ट स्पैन्सर के शब्दों को उद्धृत करते हुए सर्वप्रथम कहा था - **"अत्याचार का प्रतिकार करना न्यायोचित ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है। अत्याचारों का अप्रतिकार लोकहित के साथ-साथ स्वाभिमान का भी विघातक है।"** जहां तक एक ओर उन्होंने विदेशी सत्ता को हटाने के लिए बल-प्रयोग तथा शस्त्र ग्रहण करने के औचित्य को स्वीकार किया, दूसरी ओर यह भी कहा कि यदि हम विदेशी शासन के साथ सब प्रकार का असहयोग करें तो इसका एक दिन टिका रहना भी असम्भव हो जायेगा। इस प्रकार श्यामजी ने ही महात्मा गांधी से पूर्व असहयोग, असहकार, सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आदि की धारणाओं को प्रकट किया था।

पता - श्री गंगानगर, राजस्थान

गवेषणात्मक

मोक्ष के साधन

सत्यार्थ प्रकाश के ९वें समुल्लास के आधार पर

- आचार्य वासुदेव व्रती वेदश्रमी

प्रश्न :- मुक्ति के साधन कितने होते हैं ?

उत्तर :- मुक्ति के साध ४ होते हैं - (१) विवेक (२) वैराग्य (३) षट्क सम्पत्ति (४) मुमुक्षुत्व।

विवेक

सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का विवेचन, शरीर, जीव और ५ कोषों का विवेचन।

पंचकोष :- (१) अन्नमय कोष (२) प्राणमय कोष (३) मनोमय कोष (४) विज्ञानमय कोष (५) आनन्दमय कोष।

प्रथम :- अन्नमय कोष का विवेचन :- त्वचा से लेकर अस्थि पर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। इसका विवेचन इस प्रकार है-

(१) इस शरीर में त्वचाएं (सात परत) है।

(२) कलाए ७ हैं।

(३) आशय ७ हैं।

(४) धातुएं ७ हैं।

(५) सेवनी (सिलाई के स्थान) ७ हैं। ५ मस्तिष्क में १ जीह्वा ममें, १ शिशन में।

(६) मर्मस्थान १०७ हैं।

(७) शिराएं ७०० हैं।

(८) बाह्यस्रोत ९ हैं - (१) मुख (२) नासिका, नेत्र, कान के २-२ छिद्र=६, १+६+१ मूत्र द्वार+मलद्वार १=९।

(९) अन्तःस्रोत-१० - (१) प्राण वह (२) अन्न वह (३) जल वह (४) रस वह (५) रक्त वह (६) मांस वह (७) मेदोवह (८) मूत्र वह (९) पुरीष वह (१०) शुक्रवह।

(१०) मांस रज्जू - ४

(११) कूर्च - ६

(१२) संघात - १४

(१३) सीमन्त - १४

(१४) कंडरा - १६

(१५) जाल - १६

(१६) अस्थियों की संख्या - ३००

(१७) संधियों की संख्या - २१०

(१८) स्नायुओं की संख्या - ९००

(१९) मांसपेशियों की संख्या - ५००

(२०) हृदय - हृ - द - य (हरति, ददाति, याति)

(२१) हृदय में नाड़ियों की संख्या - १०१

शतं चैका च हृदयस्य नाड्यस्ताषां मूर्द्धानमभि निःस्मृति+एका। (कठो. ६वल्ली/मं.१६वां)

(२२) हृदय से मस्तिष्क में जाने वाली नाड़ी - १

(२३) सूक्ष्म नाड़िय़ों का जाल - ७२ करोड़, ७२ लाख। (हृदि ह्येषात्मा। अत्रैकशतं। प्रमाण-अथैकमयोर्ध्वमुदानः।

(२४) जीव का निवास स्थान : हृदय

हृदयं पुण्डरीकेण सदृशंस्यादधोमुखम्।
जाग्रतस्तद्विकसति स्वपहस्तु निमिलति।
आशयश्वत्तु जीवस्य चेतनास्थान मुत्तमम्।
अवस्वस्मिन् तमो व्याप्तेः प्राणिनः प्रस्वषन्ति हि॥

अर्थ :- हृदय में कमल के आकार का एक सूक्ष्म स्थान है जिसका मुख नीचे की ओर है। जब जागता रहता है तो वह कमल खिला रहता है जब यह मनुष्यसो जाता है वो हृदय कमल बंद हो जाता है यही जीव का निवास स्थान है।

(२५) त्रयोस्तम्भाः - (१) वात (२) पित्त (३) कफ.

(२६) प्रत्येक ५-५- प्रकार का :-

(१) वात ५ - प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान।

(२) पित्त ५ - पाचक, रंजक, साधक, आलोचक, भ्राजक।

(३) कफ ५ - फ्लेदन, अवलम्वब, रसन, स्नेहन, श्लेषण।

(२७) वात ५- (इसका उत्तर प्रश्नोपनिषद् के ३य प्रश्न में है)

(२८) पित्त :-- पाचक-जठराग्नि/वैश्वानरः/रोचना। रंजक, भ्राजक, साधक, आलोचक।

(२९) कफ :- फ्लेदन, अवलम्बन, रसन, स्नेहन, श्लेषण।

(३) मनोमय कोष :- मन+अहंकार के साथ ५ कर्मेन्द्रियाँ।

(४) **विज्ञानमय कोष** :- बुद्धि+चित्त के साथ ५ ज्ञानेन्द्रियाँ।

(५) **आनन्दमय कोष** :- शरीर ४ (१) स्थूल (२) सूक्ष्म - ५ ज्ञानेन्द्रियां + ५ प्राण + ५ सूक्ष्म भूत + मन + बुद्धि १=१७। (३) कारण - सुबुद्धि (४) तुरीय - समाधिजन्य।

वैराग्य

दृष्टानुश्रविक विषय वितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम्। योगदर्शनम्।

अर्थ - देखे हुए, सुने हुए, विषयों के प्रति वितृष्णा भाव वशीकार संज्ञा वाला वैराग्य है।

षट्क सम्पति

(१) शम (२) दम (३) उपरति (४) तितिक्षा (५) श्रद्धा (६) समाधान।

(१) शम :- आत्मा एवं अन्तःकरण की शुद्धि।

(२) दम :- शरीर एवं इन्द्रियों की शुद्धि।

(३) उपरति :- कुसंग का त्याग।

(४) तितिक्षा :- सुख-दुख, हानि-लाभ, द्वन्द्व सहन पूर्वक समाधि के साधनों में लगे हुए।

(५) श्रद्धा :- ईश्वर, वेद, धर्म, आप्तवाणी पर विश्वास।

(६) समाधान :- चित्त की शुद्धि।

मुमुक्षुत्व

जैसे क्षुधा-तृषा से आतुर प्राणि को अन्न-जल चाहिए वैसे मुमुक्षु को मुक्ति के साधन चाहिए।

प्रश्न :- मुक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर :- (१) यदा पञ्चावत्तिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तमाहुः परमां गतिम् ॥१०)
(२) तां योगमितिमन्यन्ते स्थिरामिन्द्रिय धारणाम्।
अप्रमत्तस्तदा भवति योगोहि प्रभवात्ययौ ॥११॥
(३) यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामायेऽस्य हृदिश्रिताः।
अधमर्त्योऽमृतो भवतिऽत्र ब्रह्मसमश्नुते ॥१४॥
(४) यदा सर्वे प्रमिद्यन्ते हृदयस्यास्य ग्रन्थयः।
अधमर्त्योऽमृतोभवति एतावदनुशासनम् ॥१५॥
(कठो.पल्ली. ६)

न्याय दर्शन से :-

(१) बाधनालक्षणम् दुःखम् १/१-१८)
तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।

(२) दुख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्याज्ञानानामुत्तरोतरापाये।
तदनन्तरा पायादपवर्गः। १/१/२॥

अर्थ :- (१) मिथ्याज्ञान के नाश होने पर।
(२) दोष का नाश होने पर।
(३) प्रवृत्ति का नाश होने पर।
(४) जन्म का नाश होने पर।
(५) दुख का नाश होने पर।
(६) दुख के नाश होने पर अपवर्ग की प्राप्ति।

पता - रायगढ़ (छ.ग.)

दर्शन योग महाविद्यालय की नई शाखा में प्रवेश प्रारम्भ

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत् के महान् योगी स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ की शाखा का शुभारम्भ *१ नवम्बर २०१५ को रोहतक* में स्थित **प्रभु आश्रम कुटिया,** सुन्दरपुर में हो रहा है। इसमें दर्शन के अध्यापन की योजना है। प्रवेश के इच्छुक शीघ्र रोजड़ में सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता :- प्रवेश - केवल ब्रह्मचारियों के लिए। **आयु** - कम से कम १८ वर्ष। **शैक्षणिक योग्यता** - कम से कम १२वीं पास या समकक्ष।

सम्पर्क :- ब्र. दिनेश कुमार
आर्यवन रोजड़, पत्रा-सागपुर, ता.तलोद,
जि.साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७
फोन : (०२७७०) २८७४१८, २८७५१८,
मोबा. ९४०९४१५०११, ९४०९४१५०१७

"महान् बनने के लिये इनको मिला, परिवार के किसी एक सदस्य का सहयोग"

प्रेरणात्मक

- खुशहालचन्द्र आर्य

जब हम अपने गौरवशाली इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि अधिकतर महापुरुषों को महान् बनने में उनके पूरे परिवार का सहयोग ही होता है, जैसे श्रीरामचन्द्र जी को महान् बनाने में उसकी धर्मपत्नी सीता, भाई लक्ष्मण, माता कौशिल्या, माता कैकई, हनुमान जी, बाली, सुग्रीव व अंगद आदि अनेकों का सहयोग मिला था। इसी प्रकार श्रीकृष्णा को महान् बनाने में बाबा नन्द, माता यशोदा, माता देवकी, पिता वासुदेव, पांचों पाण्डव, दादा भीष्म, गंधारी आदि अनेकों का सहयोग मिला था। परन्तु हम यहां इन तीन महापुरुषों की विवेचना करेंगे, जिनको उनके ही किसी एक सदस्य का ही सहयोग उनको महान् ही नहीं बल्कि महानतर व महानतम भी बना दिया। वे तीन महापुरुष है, शेर शिवाजी, स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज, जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे लिख रहे हैं।

(१) शेर शिवाजी :- शेर शिवाजी को इतना महान् बनाने का तथा अपने राष्ट्र के प्रति इतना अधिक समर्पित भाव जागृत करने का श्रे? उसकी महान् माता जीजा भाई को जाता है। जीजा बाई ने अपने सुपुत्र शिवा को लौरियों में, गीतों में राष्ट्रीय भावना भरती रहती थी। यही कारण था कि शिवाजी एक सच्चा राष्ट्रवादी महापुरुष बन गये और अपनी सीमित सैन्य शक्ति से औरंगजेब जैसे अन्यायी, अत्याचारी व बलवान बादशाह को भी नाकों चने चबा दिये। उसके अनेकों प्रयत्नों को बावजूद भी शिवा जी उसकी पकड़ में नहीं आये और शिवा जी अपना एक छोटा सा हिन्दू राज्य स्थापित करने में सफल हो गये।

(२) स्वामी श्रद्धानन्द :- स्वामी श्रद्धानन्द जिसका बचपन का नाम मुंशीराम था। उसका जन्म सन् १८५६ में जालन्धर जिले के गांव तलवन में हुआ था। उनके पिता नानकचन्द पहले तो फौज में रिसकदार रहे फिर पुलिस कोतवाल बरेली से बना दिये गये। एक कोतवाल का पुत्र होने के कारण उनके पास धन का अभाव नहीं था और ऊपर में सत्ता का अहंकार। इसलिये वह एक बिगड़ेल बेटा होता गया। दुनिया के सभी अवगुण उनमें घर कर गये और उनका ईश्वर पर विश्वास उठ गया। एक बार बरेली में आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती आ गये और पिता नानकचन्द के कहने से मुंशीराम स्वामी जी के व्याख्यान सुनने चला गया। वहां उसके हृदय पर स्वामी जी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उस बिगड़ेल बालक का जीवन ही बदल गया और वह केवल आर्यसमाज का ही नहीं बल्कि भारत का वह एक महान् देश सुधारक और एक अग्रणीय नेता बन गया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किये जिनको हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिनमें मुख्य कार्य ये हैं :-

२ मार्च १९०२ में हरिपुर के समीप गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। सर्वप्रथम अपने दो पुत्रों को उसमें प्रविष्ट कराया और अपनी पूरी सम्पत्ति उस गुरुकुल में लगा दी, जिसका परिणाम यह निकला कि आज वह गुरुकुल एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रुप में माना जाता है। १५ वर्षों तक उसका सुन्दर संचालन करके १० अप्रैल १९१७ को आपने सन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। इसके बाद आप पूर्णतः राष्ट्रीय कार्यक्रमों व समाज सुधार के कार्यों में लग गये।

सन्यास धारण करने के बाद आप ३० मार्च १९१९ में रोयल एक्ट के विरोध में एक प्रभावशाली और ऐतिहासिक जुलूस निकाला, जिसमें आपने गौरी सेना के सामने अपनी छाती खोलकर गोली चलाने का ऐलान किया। गौरी सेना ने गोली नहीं चलाई और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् १९१९ में जालियांवाला भीषण काण्ड होने से पंजाप में एक भयावह स्थिति बन गईआ थी। ऐसी स्थिति में अमृतसर में क्रांग्रेस के अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर अधिवेशन को सफल

किया और अपना स्वागताध्यक्ष भाषण हिन्दी में सुनाकर कांग्रेस के इतिहास में एक नया उदाहरण पेश किया। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। उन्होंने मुसलमानों की विशाल सभा में ४ अप्रैल १९२५ में विशाल सभा के सम्बोधित किया, जिसको सुनकर मुसलमान नवयुवक बहुत प्रसन्न हुए। यह दिल्ली के इतिहास में एक नई घटना थी। फिर ६ अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद से भाषण देकर स्वामी जी ने मुसलमानों का दिल जीत लिया। फिर बाद में स्वामी जी अपने आखिरी दिनों में शुद्धि का कार्य करने लगे और उन्होंने हजारों मलकाना राजपूतों तथा अन्य लोगों को युद्ध करके हिन्दू बनाया, तब कट्टर मुसलमान नाराज हो गये और २३ दिसम्बर १९२६ को एक अब्दुल रशीद नाम का धर्मान्ध नवयुवक ने गोलीमारकर स्वामी जी की हत्या कर दी। स्वामी जी की धर्मपत्नी जिसका नाम शिवादेवी था। वह बड़ी पतिव्रता नारी थी। जब स्वामी जी अनेकों दुर्गुणों व व्यसनों में फंसे हुए थे, तब वे रात्रि को दो-तीन बजे घर पर आते थे और आकर उल्टी करते थे, तब उनकी धर्म पारायण पत्नी अपने पति की बिना कुछ खाये इन्तजार करती थी। आने के बाद उनकी की हुई उल्टी को साफ करके उनको भोजन देती थी। एक दिन स्वामी जी ने उससे पूछ ही लिया कि हे ! शिवे क्या तुमने भोजन कर लिया, तब शिवादेवी ने कहा कि हे पतिदेव ! आपको भोजन करवाने से पहले, मैं कैसे भोजन कर सकती हूँ। यह सुनकर स्वामी जी अवाक् रहे गये। इसका असर स्वामी जी पर यह पड़ा कि उन्होंने अपनी सभी बुरी आदतें छोड़ दी। स्वामी जी ने अपनी जीवनी में स्वयं ने लिखा है कि मेरे जीवन को बदलने में पहला सहयोग स्वामी दयानन्द की है और दूसरा सहयोग मेरी धर्मपत्नी शिवादेवी का है। इस प्रकार शिवा देवी ने अपने बिगडेल पति को अपने आचरण के द्वारा सुधारकर उसे एक महान पुरुष बना दिया।

(३) कर्मयोगी महात्मा हंसराज :- महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रैल १९६४ में बजवाड़ा के एक छोटे से ग्राम में एक निर्धन परिवार में हुआ था। यह कौन जानता था कि यह जन्म लेने वाला बालक आगे चलकर लार्ड मैकाले द्वारा १८३५ में घोषित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के लिये एक प्रबल विद्रोही बन विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का प्रवर्तक एवं प्रचारक सिद्ध होगा। महात्मा हंसराज को लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में अध्ययन करते हुए लाला लाजपतराय व पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे प्रतिभावान सहपाठी मिल गये। इन तीनों के विचार एक समान थे। तीनों ही विदेशी विचारा धारा को समाप्त होता हुआ देखना चाहते थे। इस समय आर्यसमाज एक जीवन्त संस्था थी।

लाहौर आर्यसमाज के प्राण लाला सांईदास जी माने जाते थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और आकर्षक था कि उनके सम्पर्क में आने वाला उनकी ही बन जाता था। ये तीनों युवक भी उनके सम्पर्क और संसर्ग में आकर आर्यसमाज में आने लगे। सन् १८८३ में महर्षि दयानन्द का विषपान से बलिदान हो गया। नाव का खिलैया नाव को मझधार में ही छोड़कर चला गया। चारों ओर अन्धेरा छा गया। लाहौर में आर्य पुरुषों ने महर्षि का एक ऐसा स्मारक बनाने का विचार किया जो महर्षि के कार्यों की रक्षा के साथ-साथ विस्तार करने वाला भी हो। विचारान्तर डी.ए.वी. स्कूल खोलने का निश्चय किया गया। समस्या धन की इतनी नहीं थी कि जितनी अध्यापन कार्य करने की थी।

युवक हंसराज बी.ए. कर चुका था। आपने आचार्य के अधूरे कार्यों को पूरा करने की इसके मन में तड़प थी। उन्होंने वहां तो अपनी भावना को प्रकट नहीं दिया, परन्तु अपने अग्र भ्राता मुल्खराज को अपने मन की सब बात बतलाकर उनसे आशीर्वाद चाहा। लाला मुल्खराज ने अपने छोटे भाई को त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होते देख, स्वयं को भी उसी राह का राही बना लिया। उन्होंने कहा कि जब तक तुम स्कूल की निष्काम सेवा करना चाहो, तब तक करो। मैं अपने मासिक वेतन ८० रुपयों का आधा भाग तुमको देता रहूंगा और उसने अनेक तकलीफों व क्ष्टों को सहन करते हुये जीवन पर अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को अपना आधा वेतन देते रहे। यह था मुल्खराज का अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को महान् बनाने में सहयोग।

इस प्रकार इन दीनों दृष्टांतों में शिवाजी की माता जीजा बाई का, स्वामी श्रद्धानन्द की धर्मपत्नी शिवादेवी का तथा महात्मा हंसराज का बड़ा भाई मुल्खराज का, इन तीनों को महान् बनाने में बड़ा सहयोग रहा। इन तीनों को किसी भी सच्चे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गान्धी रोड, दो तल्ला कोलकाता-७००००७

विदेश में बजाई वैदिक दुन्दुभि-आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रास्तु।

एयर इंडिया के वायुयान से ९ घंटे की यात्रा कर २३ जुलाई २०१५ को सायं ७.३० पर हम लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट पहुंचे। ये हमारी दसवीं विदेश यात्रा है। लंदन के इंडियन आई कमिश्नर के कार्यालय भारत भवन में उच्च अधिकारी सरदार श्री एस.एश. सिद्धु जी (मीनिस्टर ऑफ को-आर्डीनेशन) से १९ अगस्त को सायं ४ बजे मुलाकात की। ४० मिनट की इस भेंट में आपकी रुचि को देखकर हमने वैदिक सिद्धान्त विषयक कुछ चर्चा की। अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश व अन्य पुस्तकें भेंट की। रोजड़ (गुजरात) के ध्यान शिविर में सम्मिलित होने का आग्रह किया। आर्यसमाज की १५ संस्थायें इंग्लैण्ड में कार्य कर रही है पर स्वयं का भवन केवल दो के ही पास है। प्रतिमाह किराये पर भवन लेकर आर्यजन सत्संग करते हैं। १९७० के दशक में आर्यसमाज की विचारधारा यहां पहुंची। अपने एक माह के प्रवास में हमें १४ सार्वजनिक मंचों पर व ११ परिवारों में उपदेश देने का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्रोताओं में भारत, पाक, मारीशस, लंका आदि देशों के मूल निवासी जो सम्प्रति ब्रिटिश नागरिक हैं, सम्मिलित हुए। भारतीय स्वतंत्रता की ६८वीं वर्षगांठ के उत्सव में आर्यसमाज बरमिंघम में आये कन्सल्ट जनरल ऑफ इंडिया श्री जितेन्द्र शर्मा जी को हमने अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। आपके कार्यालय में आयोजित बृहत् कार्यक्रम में हमें एक दिन पूर्व ही संक्षिप्त उद्‌बोधन देने का अवसर मिला। १० वर्षों से लेबर पार्टी के एम.पी. श्री वीरेन्द्र शर्मा जी, कन्जर्वेटिव पार्टी के यहूदी मत के एम.पी. श्री बोलक मेन दोनों सांसदों को हमने वैदिक साहित्य दिया। हार्रर काऊन्सिल के मेयर श्री कृष्णा सुदेश, एम.एल.ए. श्री नवीन शाह व अनेक नेता हमें अपने कार्यक्रम में मिले तो हमने विमर्श किया फिर आपने अपने नगर निगम के विशाल भवन व परिसर का अवलोकन भी करवाया। सेल्स टैक्स के असि. कमिश्नर पद से सेवानिवृत्त श्री अविनाश कृष्ण जी को योगदर्शन का समाधिपाद, आद्योपान्त व साधनपाद व सांख्यदर्शन के कुछ सूत्र पढ़ाये। परिवारों में हुई चर्चा में सन्ध्या यज्ञ, स्वास्थ्य, मूर्तिपूजा, कर्म सिद्धान्त, दर्शन, धर्म परिवर्तन, भारत के प्रति सकारात्मक भाव/सहयोग, सन्तनिर्माण आदि विषयों पर प्रकाश डाला, प्रेरणा की, समाधान किया। एक मंदिर में दिए प्रवचन का सिद्धाश्रम की वेबसाइट से सीधा प्रसारण भी हुआ। यू.के. में चार देश सम्मिलित है- इंग्लैण्ड, उत्तरी आयरलैण्ड, स्काटलैण्ड व केन्स। इंग्लैण्ड का क्षेत्रफल १३०५८ वर्ग कि.मी. है, जो भारत के तमिलनाडु प्रांत के बराबर है और कुल यू.के. का लगभग आधा है। विश्व के ७२ देशों को अंग्रेजों ने अपने चातुर्य व कुटिलता व षड़यंत्र से दासता की दीर्घकालीन जंजीरों में बांधा था। १९वीं व कुछ २०वीं सदी इनका स्वर्णयुग कहाती है। ये औद्योगिक क्रांति के जनक कहाते हैं अमेरिका कुछ विकसित देशों के साथ अपनी गहरी मित्रता के चलते विश्व की अर्थव्यवस्था को अपने इर्द-गिर्द ही ये रखते हैं। यू.के. का सैन्यखर्च दुनिया में तीसरा सबसे अधिक है। विश्व के ८० देशों में इनकी सेना तैनात है। महारानी एलिजाबेथ ॥ (८८ वर्ष) १८ देशों की राज्य प्रमुख है, वे ७० वर्षों से इस पद पर है। ईसाई धर्म इंग्लैण्ड का प्रमुख धर्म है, संसद में चर्च का स्थायी प्रतिनिधित्व है। यहां की जन संख्या ६ करोड़ है, जिनमें ३ लाख यहूदी, डेढ़ लाख बौद्ध, २० लाख हिन्दू, २५ लाख मुस्लिम ७२% ईसाई व २०% ऐसे लोग हैं जो किसी भी धर्म को नहीं मानते। पिछड़े देशों के सभी धर्मों के लाखों नागरिक यहां अवैध रुप से रह रहे हैं व नागरिकता पाने के लिए लालायित है। पूरी जीवन चिकित्सा व १६ वर्ष तक शिक्षा निःशुल्क है। अंग्रेज सुंदर, सभ्य, शिष्ट, परिश्रमी, शिक्षित, मितभाषी व व्यवहार में ईमानदार माने जाते हैं। हर घर के आगे पीछे बगीचा है। मच्छर, मक्खी, धूल, कीचड़, टूटी सड़कें, हार्न, धक्का-मुक्की, प्रदूषण दिखाई नहीं देता। हर व्यक्ति पूरा टेक्स देता है। अतः सरकार प्रजा को सभी

सुविधायें देती है। हजारों लोगों को सार्वजनिक नियमों का पालन करते देख अच्छा लगता है। कार्यालयों में भ्रष्टाचार नहीं है। मृत्यु होने पर विद्युत शव दाह गृह से १०-१२ दिन बाद की तारीख मिलती है, जिसमें लगभग ५००० पौंड=५ लाख रुपये खर्च आता है। यू.के. में हिन्दू स्वयं सेवक संघ की ११० संस्थायें विभिन्न नामों से कार्य कर रही है। ३ करोड़ पर्यटक यू.के. में और उसमें भी २ करोड़ केवल लंदन में हर वर्ष इनके ऐश्वर्य को देखने सारी दुनिया से आते हैं। बसों, ट्रेनों की व्यवस्था बहुत अच्छी है। यहां पर समय का अत्यन्त महत्व है। लंदन के हीथ्रों एयरपोर्ट पर प्रति मिनट एक हवाई जहाज का आवागमन होता है। दर्शनीय स्थलों में लंदन आई, बकिंघम पैलेस, कोहिनूर हीरे सहित कई देशों से लूटा गया सोना, हीरे व हथियार वाला क्राऊन ज्वेलर्स का म्यूजियम टावर ऑफ लंदन, मिलेनियम डोम, मैडम तुषार म्यूजियम, एयरफोर्स म्यूजियम, बिन्जरकॉसल, १६२फीट नीचे की रेल्वे लाईन स्टेशन व यात्रा बरमिंघम की नेशनल लाइब्रेरी जो मंजिलों तक फैली है। आर्ट गैलरी, वीरसावरकर, तिलक, गांधी, नेहरु, धींगड़ा जी, स्वामी विवेकानन्द जी से संबंधित स्थल आदि करीब ८० स्थान हैं। पूरे यू.के. के संभवतः १५० स्थान होंगे। वनवासों में राती काटी, बर्षों जीते रोते रोते। तब जाकर ये भान हुआ कि सोने के मृग नहीं होते।

सर्वेभ्यो नमो वाच्यम्।

कविता

अपना देश महान

समझदार एक मैं हूं, बाकी सब नादान,
इसी भ्रम में जी रहा है आज हर इंसान।
माता-पिता को दे रहे बच्चे आजकल ज्ञान,
बंद किताबे क्या पढ़ी, लंबी हुई जबान।
दिलों के बीच दूरी हुई, काफुर हुई मुस्कान,
मिट्टी पत्थर से बना ली कोठी आलीशान।
मानवता कमजोर हुई, पशुता भई बलवान,
गली-गली में लुट रहा नारी का सम्मान।
नैतिकता पतित हुई, भौतिकता उत्थान,
भ्रष्टाचार से मुक्त वो विरल हैं इंसान।
आधुनिक जीवनशैली का है ये परिणाम,
तमतमाया चेहरा, दूर पुए पकवान।
काम करे वो मूर्ख, कमजोर सुजान,
चापलूसों के घेरे में बॉस रहा अनजान।
समर्थ है मुंह ताकते, अक्षम थामे कमान,
बिचौलिया फलफूल रहा, भूका मरे किसान।
पर उपकार, देश सेवा है, किस चिड़िया का नाम,
अधिपत्य के लिये हर जगह जारी है घमासान।
अंधविश्वास को पाल रहा, पढ़कर के विज्ञान,
ढोंगी बाबा की देहली पर देखी भेड़िया धसान।
देख धरा की हालत को हंसता होगा भगवान,
क्या बनाकर भेजा था, क्या बन गया इंसान।
ऋणात्मकता को देख अजय क्यों है तू परेशान,
जैसा देखो, वैसा दिखता ऐसा है जहान।
दीवानों ने दी आजादी होकर के बलिदान,
फौजी भाई डटे सीमा पर होने को कुर्बान।
कर्मयोगी करते सेवा रहकर के गुमनाम,
वीर सपूतों की धरती है अपना हिन्दुस्तान।
फिर से इक दिन विश्व करेगा भारत का गुणगान,
आओ मिलजुल कर बनाए अपना देश महान
आओ मिलजुल कर बनाए अपना देश महान

– अजय शर्मा
पता : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, एसईसीएल छाल
जिला-रायगढ़ (छ.ग.)४९६६६५

पाती परदेश की वेद प्रचार-सात समन्दरपार - आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के रजत जयन्ति समारोह में भाग लेने हेतु (३० जुलाई से २ अगस्त २०१५) ह्युस्टन नगर में पहुंचा। यहां की आर्य समाज का भवन विशाल तथा सुन्दर है। इस समाज में बच्चों का एक विद्यालय भी चलता है। ए.पी.एस.ए. के कार्यकर्त्ता सेवाभावी, संस्कारी, संगठित तथा बुद्धिमान है, जो अपने से प्रौढ़, अनुभवी अधिकारियों के निर्देश, आशीर्वाद तथा संरक्षण को प्राप्त करके, पुरुषार्थ तथा उत्साह के साथ अमेरिका में वैदिक धर्म संस्कृति, शिक्षा के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। सम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने हेतु देश-विदेश से आने वाले आर्यजनों के आवास, भोजन, वाहन, विद्वानों के प्रवचन, विषय, अनुशासन आदि की उत्तम व्यवस्था स्थानीय युवा वर्ग ने श्रद्धा के साथ की। मुझे आशा है कि नई पीढ़ी, भविष्य में आर्यसमाज रुपी आंदोलन की तीव्र गति से विस्तृत करेगी।

ह्युस्टन से चलकर मैं न्यू जर्सी न्यूयोर्क की ओर आ गया हूँ। इन नगरों में भारत से आये सैकड़ों आर्य परिवार हैं, जो यथा सामर्थ्य यथा अवसर आर्य धर्म की परम्पराओं को अपने जीवन में अपनाये हुए हैं तथा अन्यों को भी परिचय कराने का प्रयास करते हैं। यहां पर भी मेरे अनेक प्रवचन हुए, अनेक युवकों की वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा-निष्ठा तथा उनकी भावनाओं तथा कार्यक्रमों को जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। क्योंकि अमेरिका जैसे देश में, जहां जाना, जाकर व्यवस्थित होना ही बहुत परिश्रम-साध्य है, वहां पर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना वस्तुतः स्तुत्य, श्लाघ्य अनुकरणीय तथा प्रेरक है, इनकी प्रवृत्तियों को जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिए उत्तमोत्तम साधनों, सुविधाओं, उनके सुप्रबन्ध-व्यवस्थाओं और इन सब से उपलब्ध होने वाले भोगों, ऐश्वर्यों की पराकाष्ठा का प्रत्यक्ष करना हो तो अमेरिका जाना चाहिए। इनकी लगन, परिश्रम, निष्ठा, सहयोग, विश्वास, संगठन, अनुशासन, कला, कौशल्य वास्तव में प्रशंसा करने योग्य है। प्रेयमार्ग को अपनाकर, अपरा विद्या को सूक्ष्मता से अधिगत करके, अधिकतम इन्द्रिय सुखों को भोगने की इच्छा को पूरा करने का प्रयोजन ही, इन पाश्चात्यों की इस भौतिक उन्नति का कारण है।

इन पाश्चात्य देशों में रहने वाले हमारे ही सदृश मनुष्यों की इस विस्मयकारी प्रगति का दूसरा प्रमुख कारण यह भी है कि इन्होंने अपनी ईश्वर प्रदत्त बुद्धि, शक्ति, समय, साधनों को मात्र अभ्युदय हेतु ही विनियोजित कर रखा है। इनके विचारों में न वेद वर्णित मोक्ष की कल्पना है न ईश्वर साक्षात्कार का प्रयोजन, न समाधि के प्रति श्रद्धा है, न वैराग्य के प्रति आस्था, न ध्यान-जप-तप का व्रत है, न स्वाध्याय-सत्संग की अनिवार्यता, न पुनर्जन्म में विश्वास है, न ब्रह्मचर्य के प्रति निष्ठ, न पंचमहायज्ञों के प्रति रुचि न ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों-कर्त्तव्यों का परिज्ञान। बस एक ही कामना मन में बनी रहती है कि कैसे अधिकाधिक, शीघ्रातिशीघ्र उत्तमोत्तम विषय भोगों को भोगकर सुखी बना जाय।

जिन्होंने ईश्वर प्रदत्त आन्तरिक-अभौतिक आनन्द की अनुभूति नहीं की, अथवा ऐसे सुख के प्रति विश्वास नहीं है, वे व्यक्ति इस भौतिक सुख को (दुःख रहित पूर्ण सुख मानकर) प्राप्त करना अपने जीवन का भी सुख विशेष मिलता है। और यह ऐन्द्रियिक सुख से महान् दुःख रहित, पूर्ण तथा स्थायी होता है। बिना ईश्वर के सान्निध्य के, बिना वेदानुशीलन, बिना ऋषि निर्दिष्ट सिद्धान्तों के परिपालन के, कोई मनुष्य चाहे चक्रवर्ती सम्राट भी क्यों न बन जाये, पूर्ण सुखी नहीं बन सकता। बाहर ने सुन्दर, आकर्षक, सम्पन्न, सुखी, शान्त, सन्तुष्ट प्रतीत होने वाले व्यक्तियों के पास निकटता से निरीक्षण

करे तो ज्ञात होता है कि बिना ईश्वरयी विशेष ज्ञान, बल, धैर्य, संयम, क्षमा, दया के दुःखी भयभीत, आशंकित, चिन्तित, खिन्न होते ही है, चाहे सामान्य व्यक्ति ऐसा निर्णय न निकाल पाये।

यह निश्चित है भौतिक ऐश्वर्य से तृप्त मनुष्यों को ब्रह्मनिष्ठ, जीवनमुक्त व्यक्तियों द्वारा निःश्रेयस् के साधनों का परिज्ञान प्राप्त हो जाये, तो वे शीघ्रता से सरलता से ईश्वर को जानकर जीवन सफल बना सकते हैं। हे अन्तर्यामिन ! पाश्चात्यों के अनुगामी, मृगमरीचिका के भ्रम में दौड़ लगाने वाले हम भारतीयों आर्यों को तो स्व-कृपा से सद्बुद्धि दो, प्रेरित करो कि वेदादि शास्त्रों में प्रतिपादित परा विद्या को भी जाने, उसको जीवन में क्रियान्वित करें, स्वयं जीवन को सफल बनाकर, उदाहरण रुप में विश्व के समक्ष उपिस्थत होकर यह सिद्ध कर दें कि पूर्ण सुखी, शान्त, सन्तुष्ट, निर्भीक, स्वतंत्र व्यक्ति किस प्रकार का होता है, तभी लोगों को आप पर, वेदों पर, अध्यात्म पर, ऋषियों पर विश्वास होगा अन्यथा नहीं। हे प्रभो ! अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का हमें अवसर प्रदान करो, यही आपसे प्रार्थना है, आशा है इसे आप पूरा करेंगे।

कविता

"पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश"

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें अवकाश,
यह है, मन के मैलों को साफ करने की उत्तम साबुन,
रखो इसके ऊपर निश्चयपूर्ण विश्वास.......... (१)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड और भ्रम,
दुर्गुण, दुर्व्यसन, इसके पढ़ने से पड़ जाते हैं नर्म,
है यह संजीवनी बूटी, रखो सदा अपने पास ....(२)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

है यह महर्षि दयानन्द कृत चारों वेदों का सार,
लिखी इसमें जीवन उन्नत बनाने की सभी सामग्री,
और सभी महत्वपूर्ण बातें, जो है खास-खास ... (३)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

महर्षि ने लिखा इसे, करने मानव मात्र का हित,
पढ़ो और इसके अनुसार चलो, कभी न होगा तुम्हारा अहित,
बन जाओगे तुम इतने महान, जितना महान आकाश..(४)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

जीवन की परीक्षा में, यदि होना है तुम्हें पास,
परिवार तुम्हारा सुखी बने, न आवे कभी खटास,
तो इसको पढ़ने का, कभी न छोड़ो अभ्यास..... (५)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

इसके पढ़ने से, बनेगा तुम्हारा जीवन सुखी और पवित्र,
स्वास्थ्य, सुबुद्धि, पथ सम्पन्नता, बनेंगे तुम्हारें मित्र,
कभी न पढ़ने से, कोई क्रिया छुट गई, ऐसा हो आभास (६)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

यह ग्रन्थ अमूल्य है,
लिखे इसमें मुक्ति पाने के सभी मार्ग और नाम,
यदि धर्म के अर्थ और काम किया,
तो मिलेगा निश्चित ही मोक्ष धाम,
इसकी शिक्षाओं से बढ़ते ही जाओगे,
न होगा तुम्हारा कभी भी हास (७)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, बिस्मिल ने पढ़ा था सत्यार्थ प्रकाश,
महात्मा नारायण स्वामी ने किया प्रतिबन्ध हटवाने का सत्प्रयास,
जीवन उनका बदल गया, बन गये उसी के दास..... (८)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

यह सद्ज्ञान का पुञ्ज है, करता सत्य का ही प्रकाश,
इस आलौकिक ग्रन्थ को, पढ़ने की लगी रहे तुम्हें प्यास,
सबको पढ़ने की लगन लगी रहे, खुशहाल रखता है यही आश.. (९)
पढ़ोसत्यार्थप्रकाश..............

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गान्धी रोड, दो तल्ला कोलकाता-७००००७

आरोग्य जगत

होमियोपैथी चिकित्सा से सोरायसिस का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

सोरायसिस त्वचा की ऊपरी सतह का एक चर्म रोग है ये वंशानुगत है लेकिन ये और भी कई कारणों से भी हो सकता है। आनुवंशिकता के अलावा इसके लिए पर्यावरण भी एक बड़ा कारण माना जाता है। यह असाध्य बीमारी कभी भी किसी को भी हो सकती है। कई बार इलाज के बाद इसे ठीक हुआ समझ लिया जाता है जबकि यह रह-रहकर सिर उठा लेता है। शीत ऋतु में यह बीमारी प्रमुखता से प्रकट होती है।

सोरायसिस एक प्रकार का चर्म रोग है जिसमें त्वजा में cells की तादाद बढ़ने लगती है। चमड़ी मोटी होने लगती है और उस पर खूरंड और पपड़िया उत्पन्न हो जाती है। ये पपड़ीया सफेद चमकीली हो सकती है। इस रोग के भयानक रुप में पूरा शरीर मोटा लाल रंग का पाड़ीदार चमड़ी से ढक जाता है। यह रोग अधिकत कोहनी, घूटना और खोपड़ी पर होता है। अच्छी बात ये है कि यह रोग छुतहा याने संक्रमक नहीं है। रोगी के संपर्क से अन्य लोगों को कोई खतरा नहीं है।

सोरायसिस चमड़ी की एक ऐसी बीमारी है जिसके ऊपर मोटी परत जम जाती है। दरअसल चमड़ी की सतही परत का अधिक बनना ही सोरायसिस है। त्वचा पर भारी सोरायसिस की बीमारी सामान्यतः हमारी त्वचा पर लाल रंग की सतह के रुप में उभप कर आती है और स्केल्प (सिर के बालों के पीछे) हाथ-पांव अथवा हाथ की हथेलियों, पांव के तलवों, कोहनी, घुटनों और पीछ पर अधिक होती है। १-२ प्रतिशत जनता में यह रोग पाया जाता है।

चिकित्सा में अभी तक ऐसा परिणय नहीं है जिससे सोरायसिस रोग का पता लगाया जा सके। खून की जांच से भी इस रोग का पता नहीं चलता है।

लक्षण :- रोग से ग्रसित (आक्रांत) स्थान की त्वचा चमकविहीन, रुखी-सुखी, फटी हुई और मोटी दिखाई देती है तथा वहां खुजली भी चलती है। सोरायसिस के नाखून भी प्रभावित हो जाते हैं और उन पर रोग के चिन्ह (पीटिंग) दिखाई देते हैं।

होमियोपैथिक चिकित्सा :- इस बीमारी का सही प्रकार से उपचार करने से पूर्व रोग की जड़ को दूर करना आवश्यक होता है। पहले से रोगी का मानसिक, धातुगत, शारीरिक व प्राकृतिक लक्षणों को जानकर, सम्पूर्ण लक्षणों को मिलान कर रोगी की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाकर बीमारी को जड़ से दूर किया जाता है।

कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गये हैं। कई रोगियों का उपचार चल रहा है। इस बीमारी में होमियों औषधियों का सेवन लम्बे समय तक करना आवश्यक होता है। दवाओं का सेवन नियमपूर्वक न करना भी बीमारी को आगे बढ़ाने में पूर्ण सहायक होता है।

परहेज :- इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को खाने-पीने में शुद्ध शाकाहारी भोजन, हरी सब्जियां, फल आदि का प्रयोग करना अति आवश्यक है। नियमित रुप से ताजा पानी अधिकाधिक पीते रहने चाहिये जिससे कि पाचन क्रिया सुलभ बना रहे। नहाने-धोने के लिये बाजार के साबुनों का प्रयोग पूर्णतः बन्द करके चिकित्सा प्रणाली में कार्य करने वाले साबुनों का उपयोग पूर्णतः बन्द करके चिकित्सा प्रणाली में कार्य करने वाले साबुनों का उपयोग हितकर होता है। वर्तमान में सोरायसिस नामक यह रोग धीरे-धीरे संक्रमण की तरह देश में फैल रहा है। इसके लिए रहन-सहन शुद्ध वातावरण होना अति आवश्यक है।

पता - त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में

शिक्षक दिवस समारोह सम्पन्न

रायपुर । दिनांक ५ सितम्बर २०१५ को महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में शिक्षक दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः ९.०० बजे विश्व कल्याण महायज्ञ से हुआ, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा रहे एवं समस्त शिक्षक-शिक्षिकायें यजमान के रुप में भाग लेते हुए आहुतियाँ प्रदान की गई। तत्पश्चात् १०.३० बजे कुर्सी दौड़ शिक्षक एवं शिक्षिकाओं अलग-अलग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें पुरुष वर्ग श्री किशोर चव्हान एवं महिला वर्ग में श्रीमती पूर्णिमा वर्मा को ११००-११०० रुपये का नगद पुरस्कार सभा प्रधान द्वारा दिया गया। दोपहर १२.०० बजे सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कई शिक्षिकाओं को पुरस्कार दिया गया।

दोपहर १२.३० बजे श्री मिथलेश यादव (१२वीं) द्वारा मिमीक्री प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात नृत्य का कार्यक्रम सर्वश्री प्रदीप सिंग, विश्व लांगसा एवं मिथलेश यादव सभी कक्षा १२वीं के छात्रों द्वारा नृत्य की प्रस्तुति की गई, जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान द्वारा अपने सम्बोधन कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जो कि भारत के प्रथम उपराष्ट्रति एवं द्वितीय राष्ट्रपति के रुप में गौरवान्वित हुये, वे प्रारम्भ में शिक्षक थे। आज के ही दिन उनका जन्म हुआ था, इसलिए ५ सितंबर को प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रुप में सम्पूर्ण भारत वर्ष के शिक्षण संस्थाओं में आयोजित किया जाता है। प्रधान जी ने यह भी कहा कि दुनियां चांद और मंगल ग्रह तक पहुंचने का कार्यक्रम में सफल हो रहे हैं, विज्ञान के आविष्कार में रोबोट जैसा मशीन मानव के द्वारा बड़े-बड़े कार्य सफल किये जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि हमें मशीनमैन (रोबोट) नहीं बनाना है, अपितु प्रत्येक छात्र-छात्राओं शिक्षक-शिक्षिकाओं में संवेदनायुक्त नागरिक तैयार करना है, जिसे अपने भारतीय संस्कृति पर गर्व हो, प्रत्येक छात्र-छात्रा अपने मार्गदर्शक गुरुजनों का आदर करे। इसके बाद आज जन्माष्टमी का पावन पर्व के विषय में भी प्रधान जी ने प्रकाश डाला और कहा - **अपूज्या यत्र पूज्यते तु व्यतिक्रमः, त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुभिक्षं मरणं भयम्** । जहां पूजा के योग्य का सत्कार नहीं किया जाता और जहां अपूज्यों का सत्कार किया जाता है, वहां दुर्भिक्ष, मरण एवं भय का वातावरण उत्पन्न होता है। समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को सभा द्वारा वस्त्र दान किया गया।

इस अवसर पर आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा सदस्य, श्री के.के. विज सदस्य, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी सदस्य, डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय सदस्य आर्यसमाज टाटीबन्ध उपस्थित रहे।

इसी प्रकार सभा के विद्यालय लवन, कूरा एवं धमतरी के समस्त ३१ शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं भृत्यों को सभा द्वारा वस्त्र दान दिया गया।

- टाटीबन्ध से लौटकर सभा मंत्री

महात्मा चैतन्य मुनि द्वारा गुरुकुल आश्रम सलखिया में वेदप्रचार सम्पन्न

सलखिया (रायगढ़) । दिनांक ८ सितंबर से १३ सितंबर २०१५ तक गुरुकुल आश्रम सलखिया में आयोजित वेदप्रचार कार्यक्रम में महात्मा चैतन्यमुनि एवं माता सत्यप्रिया यती द्वारा वेद प्रचार एवं सुमधुर भजनोपदेश की प्रस्तुति की गई, जो कि अत्यन्त हृदयग्राही व प्रभावशाली रहा। महात्मा चैतन्यमुनि जी अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता संस्थापक वैदिक वशिष्ठ आश्रम सुन्दरनगर (हि.प्र.) के पावन सान्निध्य में वैदिक प्रवचन के साथ माँ सत्यप्रिया यती जी के मधुर भजन द्वारा सैकड़ों उपस्थित आर्यजन प्रभावित हुये। सभा द्वारा महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं सत्यप्रिया यती का सम्मान किया गया।

- निज प्रतिनिधि

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस सोल्लास संपन्न

हुड़को (भिलाई) । डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आमदीनगर हुडकों भिलाई में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता (क्षेत्रीय निर्देशक मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़ परिक्षेत्र०१) श्री प्रशांत कुमार द्वारा की गई। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए प्रशिक्षित किए जा रहे विद्यालयीन छात्र-छात्राओं ने योग का सुन्दर प्रदर्शन किया। इनके अलावा शिक्षक-शिक्षिकाओं के द्वारा भी प्रदर्शन किये गये। वैदिक ऋचाओं की उद्घोष के साथ योगाभ्यास आचार्य जयदेव शास्त्री के निर्देशन में प्रारंभ हुआ। योग की महत्ता का उल्लेख करते हुये श्री प्रशांत कुमार ने कहा - संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को हम केवल एक दिन के लिए न अपनाए, बल्कि इसे हमेशा के लिए अपनाए। प्रतिदिन कम से कम पांच से सात मिनट अवश्य करें। योगाभ्यास ऊर्जा को संरक्षित करने का एक सशक्त साधन है। पतंजलि योगदर्शन में पहला सूत्र योग ही है। योग से ही चित्त की वृत्तियों को अंकुश में लाया जा सकता है। योग शाश्वत शांति और सुख का ही पर्याय है। हम स्वयं जुड़े और अन्यों को जुड़ने के लिए प्रेरित करें। योग स्वस्थ तन और मन की प्राप्ति योग से ही संभव है। योग प्रशिक्षक आचार्य जयदेव शास्त्री ने कहा - शारीरिक और मानसिक प्रसन्नता योग से ही प्राप्त किया जा सकता है। योग को नित्य अपनायें। साथ ही सात्विक आहारी बने। जिससे जीविका सुखद व स्वस्थ रहे। शास्त्री जी के मार्गदर्शन में सिद्धासन, पद्मासन, पश्चिमोत्तासन, सर्वांगासन, अदूर्ध चक्रासन, सर्पासन, भुजंगासन, वक्रासन, उत्तानपादासन, शीर्षासन जैसे विभिन्न प्रकार के आसन कराए गए। योग-शिक्षा को नित्य अपनाये जाने की शुभ संकल्प के साथ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का सोल्लास समापन हुआ। विद्यालयीन छात्र-छात्राओं द्वारा जयंती स्टेडियम सिविक सेन्टर में योगाभ्यास का कुशल प्रदर्शन किया गया। वैदिक शांतिपाठ के साथ समारोह संपन्न हुआ। ***संवाददाता - प्राचार्य, डी.ए.वी. प. स्कूल, हुडको भिलाई***

अग्निदेव आर्य कन्या प्राथ. शाला एवं डी.ए.वी. माध्य. शाला में शिक्षक दिवस व जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

धमतरी । दिनांक ५ सितंबर २०१५ को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण के जन्मदिवस के अवसर पर एवं जन्माष्टमी पर्व अग्निदेश आर्य प्राथ. एवं डी.ए.वी. माध्य. शाला धमतरी के संयुक्त तत्वावधान में हवन एवं सत्संग का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

हवन पश्चात् आर्यसमाज धमतरी की संरक्षिका श्रीमति विजयलक्ष्मी महावर ने बच्चों को श्रीकृष्ण जी के जीवन से जुड़ी अच्छी-अच्छी बातों का ज्ञान कराया एवं डॉ. राधाकृष्णन् को एक अच्छे गुरु होने का साथ विश्व के महान चिंतकों में से एक थे। कार्यक्रम में आर्यसमाज धमतरी के प्रधान श्री सत्यकाम आर्य, श्रीमति रत्ना आर्या, सचिव श्री अजय गोस्वामी, श्रीमति संध्या गोस्वामी, कु. आयुषी शाला की प्रधानपाठिका श्रीमति मंदा बाबर एवं माध्य. शाला की प्रधान .पाठिका श्रीमति सीमा शिन्दे, श्रीमती रमा तिवारी, कृष्णा सोनी, अन्नपूर्णा नेताम, कु. डिम्पल साहू, कु. भूलक्ष्मी साहू एवं सभी छात्र-छात्रायें उपस्थित हुये।

संवाददाता : प्रधानपाठिका, डी.ए.वी. मा. विद्यालय धमतरी

आर्यसमाज काँसा के संस्थापक श्री चरणसिंह को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

कांसा (जांजगीर चांपा)। आर्यसमाज कांसा के संस्थापक एवं प्रधान श्री चरणसिंह आर्य जिनका जन्म ९ अक्टूबर १९४० है, लगभग ७४ वर्ष की आर्य में दिनांक २०-७-२०१५ को हृदयघात के कारण देहावसान हो गया, जिनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रिति से आचार्य रणवीर आर्य, आचार्य आत्मवीर आर्य, आचार्य सुरेश आर्य के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। दशकर्म के दिन शान्तियज्ञ करवाने हेतु आर्यसमाज बिलासपुर के आचार्य जयदेव शास्त्री जी पधारे थे। यज्ञ के बाद सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य जी एवं पं. जैमिनि कुमार शर्मा जी ने सुन्दर उपदेश किया, गुरुजी के व्यक्तित्व को प्रकाशित किया एवं परिवार को सहानुभूति प्रदान की। आप सपरिवार आर्यसमाज के कर्मठ, निष्ठावान समर्पित कार्यकर्ता थे एवं सेवानिवृत्त प्रधान अध्यापक थे। इन्होने आर्ष ग्रन्थों का संकलन किया तथा समाज के लोगों के घर-घर जाकर संदेश दिया करते थे, वेद के प्रचार-प्रसार उनका अति प्रिय कार्य था, लगातार ४३ वर्ष शासकीय सेवा में रहते हुए अध्यापन कार्य करने के साथ साथ आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय उन्हें अति प्रिय था। आर्यसमाज कांसा के धड़कन श्रद्धेय चरणसिंह आर्य के निधन पर सारा आर्यसमाज शोक मग्न हो गये। वे एक सत्यप्रिय, निष्ठावान, साहसी, सरल एवं मृदुभाषी सभी के प्रिय थे। वे अपे पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।

- संवाददाता आर्यसमाज कांसा

सिंहस्थ कुम्भ नासिक में सभा की ओर से योग एवं धर्म प्रचार

दुर्ग। दिनांक १५ सितंबर से २१ सितंबर २०१५ तक आर्यजगत् में छत्तीसगढ़ क्षेत्र में विशेषकर योग, प्राणायाम की अलख जगाने वाले स्वामी अशोकानन्द जी महाराज जो कि अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक विजेता हैं, के द्वारा सिंहस्थ पावन कुंभ नासिक (महाराष्ट्र) में श्री संतोष जी आर्य के सौजन्य से योग, प्राणायाम, योगासन के प्रदर्शन सहित वेदप्रचार का कार्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सम्पन्न किया गया। सैकड़ों साधुओं एवं हजारों तीर्थ यात्री लाभान्वित हुये। प्राकृतिक चिकित्सा का सफल प्रशिक्षण एवं चिकित्सा का आयोजन किया जो अत्यन्त सफल रहा। ग्राम आरोग्य अभियान-रसोई, पत्र पुष्प, एक्यूप्रेशर, प्राकृतिक चिकित्सा नामक पुस्तक सैकड़ों की संख्या में निःशुल्क वितरित की गई, जिसे शतसः तीर्थवासी लाभान्वित हुये।

संवाददाता- दिलीप आर्य, कार्यालय मंत्री

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं.: 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं। **- दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता: 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन: ०७८८-२३२२२२५

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न 5 सितंबर शिक्षक दिवस की झलकियाँ

अक्टूबर 2015
डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,
श्री

प्रेषक :
अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग -491001 (छ.ग.)

त्रय वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन की अधिसूचना

मान्यवर,

सभा की नियमावली की धारा 25 और माननीय सभा प्रधान जी के निर्देशानुसार तथा अन्तरंग बैठक दि. 27-7-2015 और नैमेत्तिक अन्तरंग बैठक दि. 24-8-2015 में लिये गये निर्णयानुसार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की त्रय वार्षिक साधारण सभा का वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक 11 अक्टूबर 2015 (रविवार) को पूर्वाह्न 11.00 बजे से "रेड क्वीन" जगतपुर, हीरो होण्डा शो रुम के पास, रायगढ़ (छ.ग.) में आयोजित की गई है। संबंधित आर्यसमाज के सभी मान्य प्रतिनिधियों से आग्रह है कि वे बैठक में समय पर पधारकर वृहदधिवेशन तथा निर्वाचन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने की महान् अनुकम्पा करेंगे।

मंत्री

दीनानाथ वर्मा

नोट :- अपने आगमन की सूचना दो दिवस पूर्व अनिवार्यतः इस नंबर पर देवें। सभा कार्यालय (0788-4030972) सभा मंत्री (9826363578), कार्यालय मंत्री (9630801257)

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया.